मेरिट लिस्ट में वही बच्चा आता है जिसका मानसिक विकास औरों से बेहतर होता है... और बेहतर मानसिक विकास के लिए उसे चाहिए...

चिल्ड्रन्स नॉलिज बैंक

VOL. I & II

बच्चे का बौद्धिक विकास तभी बेहतर होता है, जब पाठ्य-पुस्तकें पढ़ने के अतिरिक्त उसके मस्तिष्क में उभरने वाले 'क्यों ?' और 'कैसे ?' किस्म के सैकड़ों-हज़ारों प्रश्नों के समुचित उत्तर उसे सही समय पर मिलते रहें ? और ऐसे ढेरों अनबूझे प्रश्नों के सही उत्तरों के लिए उसे चाहिए......

चिल्ड्रन्स नॉलिज बैंक VOL. I & II

प्रत्येक भाग में लगभग 200 प्रश्न

चिल्ड्रन्स नॉलिज बैंक की योजना पर विशेषज्ञों की एक पूरी टीम कार्य कर रही है, जिसमें वैज्ञानिकों व अनुभवी लेखकों-सम्पादकों के अलावा चित्रकारों का एक पूरा दल शामिल है।
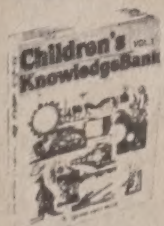
Now on Sale

English Edition of Volume I

Excels Hindi Edition in text and illustrations

Price and pages same

सभी पुस्तकें प्रमुख बुकसेलरों, ए० एच० व्हीलर के रेलवे तथा अन्य बस अड्डों पर स्थित बुक स्टालों पर मिलती हैं।

मानव-शरीर, जीव-जन्तु, धरती-जल-आकाश, खनिज, खेल-खिलाड़ी, सामान्य ज्ञान, भौतिक-रसायन व जीव विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान तथा वैज्ञानिक आविष्कारों से संबंधित अनगिनत

प्रश्नों में से कुछ की झलक :

• एंटी बायाटिक्स क्या हैं ? • चश्मे से सही कैसे दिखाई देता है ? • सप्ताह के दिनों के नाम कैसे पड़े ? • रेगिस्तान कैसे बनते हैं ? • घड़ियों के माणिक(ज्यूल्स)क्या होते हैं ? • बिना खाये कितने दिन रहा जा सकता है ? • व्यक्ति बूढ़ा क्यों होता है ? • ओले कैसे बनते हैं ? • इन्द्रधनुष कैसे बनता है ? • विश्व के सात आश्चर्य कहां गए ? • आंधी और तूफान कैसे आते हैं ? • चलते समय चांद हमारे साथ-साथ क्यों चलता है ? • प्रेशर कुकर में खाना जल्दी क्यों पकता है ? • थर्मस फ्लास्क में गर्म चीजें गर्म और ठंडी चीजें ठंडी क्यों रहती हैं ? • एक्स किरणें क्या हैं ? • परमाणु बम क्या है ? • महिलाओं की आवाज सुरीली क्यों होती है? • रोने में आंसू क्यों निकलते हैं ? • मुंह से आवाज कैसे पैदा होती है ? • सर्दियों में मेंढ़क कहां चले जाते हैं ? • मधु-मक्खी शहद कैसे बनाती है ? • फल खट्टे या मीठे क्यों होते हैं ? • ताश खेलना कब शुरू हुआ ? • क्या ब्रैडमैन रन बनाने की मशीन था ?

वी. पी. पी. द्वारा मंगाने के लिये लिखें

पुस्तक महल

खारी बावली, दिल्ली-110006

नया शो रूम : 10-B, नेता जी सुभाष मार्ग, दरिया गंज नई दिल्ली-

गहनों का वैज्ञानिकीकरण

आज हमारे देश में काम के अभाव में हजारों शिक्षित इंजीनियर बेकार हैं। यह देश की प्रतिभा का निरुपयोग है। इन्हें काम देने के लिये हर क्षेत्र में नयी-नयी संभावनाओं की खोज करनी चाहिये। उदाहरण के लिये औरतें जो गहने पहनती हैं वे केवल सजावटी होते हैं, इन गहनों का वैज्ञानिकीकरण होना चाहिये। इनमें छोटे-छोटे उपयोगी यंत्र जोड़ दिये जायें। इन्जीनियरों को एक नया क्षेत्र मिलेगा। गहने पहनने वालों के लिये सजावट की सजावट और यंत्रों के लाभ का लाभ मिलेगा।

कान के कांटे या झुमके में देखिये क्या सुधार लाया जा सकता है? मिनी न्यूनतम-अधिकतम ताप मापक को सफाई से झुमके का रूप दिया जा सकता है। वायुमंडल के टैम्परेचर के लेटेस्ट स्कोर का पता लगता रहेगा।

नाक पर जो जेवर पहना जाता है उसमें सूक्ष्म अल्कोहल सैंसर फिट हो। वायुमंडल में अल्कोहल की मात्रा होने पर सैंसर वैसे ही एलार्म बजाये जैसे डिजिटल घड़ियां बजाती हैं। पति शराब पीकर घर आये तो बगैर पूछताछ, जिरह किये बगैर पता लगा जायेगा उसने शराब पी रखी है।

होठों के लिये लिपस्टिक के स्थान पर होठों की आकृति के लाल स्टिकर बनें। स्टिकर स्ट्रिप में से उखाड़ा और होठों पर चिपका लिया। आसानी की आसानी रहेगी। उखड़ने का डर भी कम रहेगा।

बाजूबन्द में सफाई से ब्लडप्रैशर मापक यंत्र फिट किया जा सकता है। गहना का गहना और साथ-ही साथ घटते-बढ़ते ब्लड प्रैशर की रनिंग कमेंट्री भी आती रहेगी।
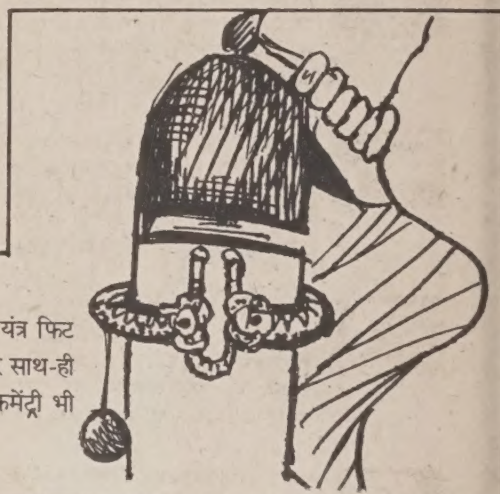
बालों या माथे पर सुशोभित होने वाले गहनों के साथ एक छोटी सी बैटरी चालित टार्च इस प्रकार फिट हो कि पहनने पर उसका प्रकाश ठीक वहां गिरे जहां स्त्रियां बिन्दी लगाती हैं। टार्च में बल्ब रंगदार होगा अर्थात् यह छोटा सा स्पाटलाइट बिन्दी का काम देगा। धोने या चिपकाने, उखाड़ने का झंझट भी नहीं रहेगा।

गले में पहने जाने वाले गहने में दबाव मापक यंत्र फिट हो सकता है। दबाव बढ़ने पर बीच में सफाई से जड़ा लाल बल्ब जलने लगेगा। गुस्से या उत्तेजना में सांस तेज़ होगी तो गले पर दबाव बढ़ेगा। जैसे ही लाल बल्ब जलने लगेगा दूसरे लोग सावधान हो जायेंगे।

आपका भविष्य

पं. कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञभूषण पं. हंसराज शर्मा

मेष : श्रम एवं दौड़धूप आप विगत दिनों में करते रहे हैं—उसके सुपरिणाम प्राप्त होने का समय आ गया है, कामकाज की व्यस्तता में समय अच्छा बीतेगा, उत्साह बढ़ेगा और कारोबार से लाभ भी पहले से अच्छा होने लगेगा।

वृष : इन दिनों कोई अप्रिय समाचार मिलने या घटना होने की संभावना है, सफलता के मार्ग में कुछ बाधाएं तो आएंगी परन्तु परिश्रम करने पर काम बनते रहेंगे, नई योजना के आरम्भ में व्यय परन्तु बाद में अच्छा लाभ।

मिथुन : कारोबार में सुधार एवं नवीनता लाने के लिए किसी देर से सोची हुई योजनापर अमल करेंगे, उन्नति के अवसर आएंगे, कठिनाईयां या कोई अप्रिय घटना आपकी प्रगति को रोक न सकेगी।

कर्क : अच्छे लोगों का सहयोग रहेगा एवं उनके परामर्श से आप हानि से बच जाएंगे, कोई भारी संकट आने से टल जाएगा, परन्तु दीर्घकाल से चली आ रही समस्याएं अभी पीछा न छोड़ेंगी, दिन संघर्षपूर्ण चल रहे हैं।

सिंह : समय काफी तनावपूर्ण हालात में से गुज़र रहा है और आप को कठिनाईयों तथा रुकावटों का सामना करना पड़ रहा है, महत्वपूर्ण काम जिनसे आपको लाभ की उम्मीदें बंधी हुई हैं अभी पूरे न हो पाएंगे।

कन्या : मिजाज़ में तेजी या जल्दबाज़ी आने से कुछेक समस्याएं एवं कठिनाईयां आपके सामने पेश आएंगी, वैसे जहां तक संबंध है इस सप्ताह का यह संघर्षपूर्ण भी है और दिलचस्प भी।
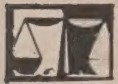
तुला : सफलता के मार्ग में कुछ रुकावटें तो जरूर आएंगी परन्तु अब कठिनाईयां एवं रुकावटें धीरे-धीरे समाप्त होती जाएंगी, वातावरण एवं हालात पहले से सुधरेंगे, यात्रा हो सकती है, दोस्तों एवं सज्जनों से मेल मिलाप।

वृश्चिक : यह सप्ताह कुछ संघर्षपूर्ण सा महसूस होगा, संघर्ष आएंगे, चिन्ता एवं रुकावटें भी रहेंगी लेकिन ये सब कुछ होने के बावजूद भी सफलता नसीब होती रहेगी, मनोरंजन आदि में समय अच्छा गुज़रेगा।

धनु : सप्ताह दिलचस्प है, किए कामों के शुभफल प्राप्त होने लगेंगे, यदि नई योजना शुरू करने का विचार बना रहे हैं तो आरम्भ कर लें, भविष्य में लाभ अच्छा होगा, कठिनाईयां धीरे-धीरे दूर होती जाएंगी।

मकर : सप्ताह अच्छा है परन्तु व्यर्थ की समस्याओं से मन परेशान रहेगा, कोई नई समस्या पैदा होगी जिससे काम देर से बनेंगे, दोस्तों से मेल जोल एवं सहयोग मिलता रहेगा, स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कुम्भ : व्यर्थ का व्यय या झंझटों का सामना होगा, फिर भी यह सप्ताह संघर्षमय होने के साथ-साथ दिलचस्प रहेगा, काम समय पर बनते जाएंगे, खुशी एवं उत्साह बढ़ेगा, अफसरों से मेल-जोल।

मीन : प्रयत्न करने पर सफलता नसीब होगी भले ही कुछ देर से मिले, शत्रु सामना न कर पाएंगे, कोई विशेष समस्या या गम्भीर उलझन जो काफी समय से चली आ रही थी, अब समाप्त होती दिखाई देगी, वातावरण सुधरेगा।

अंक ग्यारह बेहद पसन्द आया। मुखपृष्ठ पर चिल्ली के सिर पर जन्तर-मन्तर देखकर हंसी आ गयी। इस अंक में सब कुछ था लेकिन काका के कारतूस, फिल्म जगत आदि न देखकर दुख हुआ मगर अन्य स्तम्भों ने इस कमी को पूरा कर दिया।

अजिन्द्र सिंह चुघ—शाहदरा

मैं आपके दीवाना के लाखों दीवानों में से एक हूं। दीवाना अंक 11 बहुत लेट मिला। कृपया अंकों को लेट मत करा करिये। नया अंक डेढ़ माह बाद प्राप्त हुआ। देखते ही दिल खुश हो गया। लेकिन इस बार भी मोटू-पतलू के दर्शन नहीं हुये। कृपया मोटू-पतलू प्रत्येक अंक में दिया करें।

अन्य सभी फीचर बहुत ही अच्छे थे। मोटू-पतलू की कमी को महसूस ही नहीं होने दिया।

राजेन्द्र सिंह बेदी—सितारगंज

दीवाना अंक 11 बहुत ही इन्तजार के बाद प्राप्त हुआ। पहले आपने साप्ताहिक से इसे पाक्षिक किया तथा अब मासिक कर दिया है। इससे दीवाना के दीवाने बहुत ही नाराज हैं। मुख पृष्ठ पर चिल्ली के सर पर एशियाई खेल का चित्र देखकर हंसी के मारे बुरा हाल हो गया। और अन्दर के पृष्ठों पर लल्लू, राडार के नये दीवाने माडल, चन्द किस्से फ्लाई ओवरों के, ऐसा क्यों या कैसे, एशियाई खेल और तुम्हारा तेल, बैंक डकैतियों का नया रूप तथा सिलबिल-पिलपिल की उड़न तश्तरी, लेखों तथा कार्टूनों में पहले से हंसी भरी हुई थी। जैबरे के शरीर पर सफेद धारियां क्यों होती हैं (क्यों और कैसे) में जो जानकारी दी गई, सच में तारीफ लायक है। विश्व की अजीब वसीयतें लेख पढ़ कर तो बहुत आश्चर्य हुआ कि संसार में कैसे-कैसे लोग होते हैं। आपने जो दोनों स्तम्भ 'आपस की बातें', गरीब चन्द की डाक इकट्ठी एक ही अंक में दीं। इसके लिए सभी पाठक आभारी हैं।

गुरमीत सिंह मीता—नई दिल्ली-49

हास्य विशेषांक के प्रथम पृष्ठ पर चिल्ली जी की एशियाड वर्दी बेहद पसन्द आयी। इसके अतिरिक्त सिलबिल-पिलपिल, राडार के नए दीवाने मॉडल पसन्द आये तथा पढ़कर हंसी से लोट-पोट हो गये।

एशियाई खेल और तुम्हारा तेल ने तो इस अंक में चार चांद लगा दिये। और सभी स्तम्भ अच्छे थे।

बद्रीश मोहन टन्टन—शाहजहांपुर

दीवाना का नया अंक 11 पढ़ा, अनोखा आनन्द महसूस हुआ। गरीब चन्द की डाक व आपस की बातें और एशियन खेल और तुम्हारा तेल काफी रोचक लगे। लल्लू और चन्द किस्से फ्लाई ओवरों ने हंसा हंसाकर पेट में दर्द कर दिया। बाकी सब ठीक लगा।

कृष्ण दुआ प्रेम नगर—जीन्द

मुख पृष्ठ पर

चिल्ली बैठा सड़क पर
शतरंज खेली जाये
ऐसे में तो खेल का
मज़ा दूना हो जाये।
कहे चिल्ली सब जनता से
तुम भी देखो खेल
बीच सड़क में खेलने से
बढ़ जाता है मेल।।

दीवाना

अंक : १५ वर्ष : १८ १-१४ अगस्त १९८२

सम्पादक : विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका : मंजुल गुप्ता
उपसम्पादक : कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा	:	२७ रुपये
अर्द्ध वार्षिक	:	१४ रुपये
एक प्रति	:	१.५० रुपये

किस्सा-ए-माडर्न आर्टिस्ट

—प्रेमचन्द्र गोस्वामी
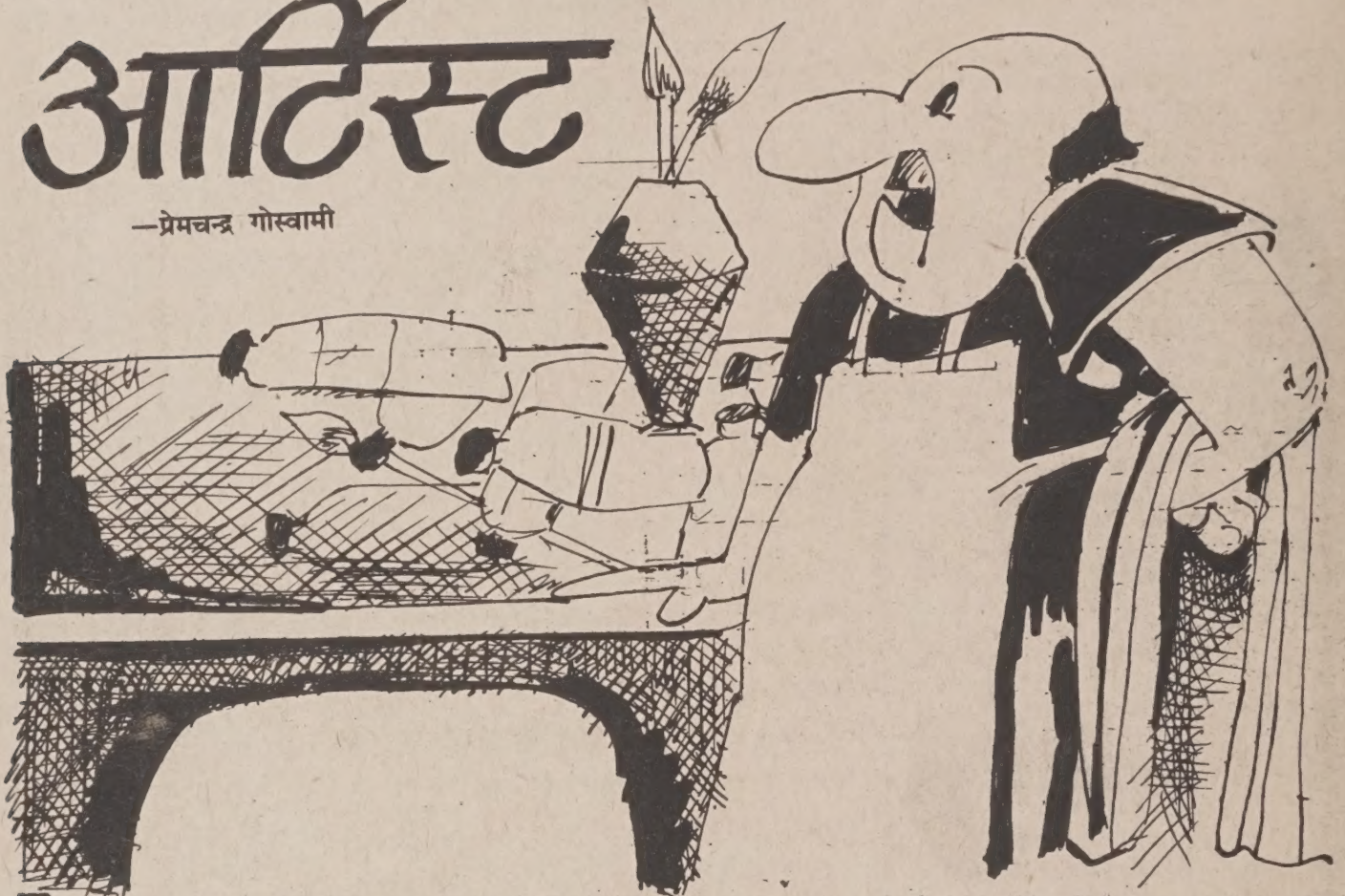
जब मैं नींद में होता हूं तो सपने मेरे दिलोदिमाग पर अक्सर अपना कब्जा जमा लेते हैं। ऐसा अक्सर होता है। पिछले कुछ दिनों से मुझे अजीबोगरीब सपने आ रहे हैं। अभी कल की ही बात लीजिए। मुझें सपना आया—जैसे मैं आधुनिक चित्रकार हो गया हूं। जी हां, चित्रकार यानि चितेरा यानि मुसव्विर। आपको एतराज न हो तो बता दूं कि स्वप्न में मुझे बड़ी सरलता से एक लोकप्रिय आधुनिक चित्रकार या माडर्न आर्टिस्ट बनने का मौका मिल गया है।

बिना किसी मेहनत और परिश्रम के प्राप्त इस इनाम के लिए मैं खुदा का शुक्रगुजार हूं और उन भाई बहनों का भी जिन्होंने अपनी वाहवाही से मुझे शहर के बनामधन्य चित्रकार के रूप में प्रतिष्ठा दी है।

मैं खुदा को हाजिर-नाजिर समझकर सौ फीसद सच कह रहा हूं कि मैंने अपनी जिन्दगी में किसी आर्ट स्कूल में जाकर चित्रकला का अध्ययन नहीं किया। वहां कौन क्या पढ़ाता है और कौन क्या पढ़ता है इसके बारे में मेरी जानकारी नहीं है लेकिन यह सही है कि मैं चित्रकार हो गया।

आप इस विषय में ज़रूर जिज्ञासा करेंगे कि आखिर मेरे पास ऐसा कौन सा जादू का डंडा था जिसे घुमाया और मैं देखते ही देखते चित्रकार बन गया। तो सुनिये। दिमाग की एक छोटी सी कारीगरी ने मुझे शहर के चित्रकार के रूप में प्रतिष्ठा दिलवाई है। जाहिर है कि आप उस कारीगरी के बारे में भी कुछ जानना चाहें।

जैसा कि आप जानते हैं—आजकल की कला दीर्घाओं में ऊटपटांग रंगों और बेतरतीब आड़ी तिरछी रेखाओं वाली चित्र कृतियां ही ज्यादातर दिखाई देती हैं—आप लोगों की तरह एक दिन मैं भी वहां पहुंच गया। दिमाग में एक तरंग उठीं —क्यों न मैं भी कैनवास पर रंग रेखाएं बिखेर कर चित्रकार बन जाऊं?

और मैंने आव देखा न ताव—बाजार से कैनवास और रंग लाकर चित्र बनाने बैठ गया। मैंने दिल खोलकर कैनवास पर रंग फैंकें। मनसमाए ढंग से आड़ी तिरछी रेखाएं बनादीं। जब ऐसा करते-करते तंग आ गया तथा एक ओर खड़ा हो कर अपने माथे पर उभर आई पसीने की बूंदें पोंछ रहा था तो अचानक मेरा मित्र योगेश आ गया। वह शहर की एक सुप्रसिद्ध कलादीर्घा में प्रदर्शनी अधिकारी के पद पर है। फर्श पर पड़ी मेरी विचित्र पेंटिंग को देखकर जैसे चौंक गया। बोला—यार! तुमने तो कमाल कर दिया। आज तुमने इतनी शानदार पेंटिंग बनायी है कि बस पूछो मत। इस कलाकृति को तो स्टेट अवार्ड मिलेगा। राज्य का सबसे बड़ा पुरस्कार पांच हजार रुपया नकद।

मैं आश्चर्य विस्फरित आंखों से मित्र को देखने लगा। शानदार कलाकृति राज्य का कला पुरस्कार—मैं उसके कथन पर विचार सा करने लगा। इसी बीच वह बोला—मैं इस महान कलाकृति को अपने साथ ले जा रहा हूं। इसे अच्छे से फ्रेम में मंढवाकर स्टेट अवार्ड की प्रतियोगिता में भिजवा देता हूं।

मैं कुछ भी नहीं कह सका। हतप्रभ हुआ अपने मित्र को देखता रहा। वह चित्र को अपने साथ ले गया।

कुछ दिनों बाद मुझे एक बधाई तार मिला। लिखा था—वर्ष की श्रेष्ठ कलाकृति पर पांच हजार रुपयों का स्टेट अवार्ड प्राप्त करने के लिए बधाई।

पांच हजार रुपयों का पुरस्कार और मेरी उस कलाकृति पर . . .। मैं समझ गया यह सब दिल खोल कर रंग फेंकने और अंधाधुंध आड़ी तिरछी रेखाएं खींचने का ही कमाल है।

कारण

—दिनेश चन्द्र शर्मा

एक साधु एक स्थान पर प्रवचन करता था. हजारों लोग साधु के प्रवचन सुनने आतें थे. उन्ही में से एक वृद्धा नियम ·· पूर्वक साधु के प्रवचन को बड़े ध्यान से सुनती थी. जब तक साधु प्रवचन करता, वृद्धा प्रेम-पूर्वक उसके मुख को निहारती रहती थी. महात्मा जी सोचते, कि यह वृदा बड़े धार्मिक विचारों वाली स्त्री है, जो उनके प्रवचन को बड़े ध्यान से सुनती है.

साधु को उस स्थान पर प्रवचन करते छः दिन हो चुके थे. आज सातवां दिन था. साधु आज प्रवचन करके उस स्थान से दूसरे स्थान को जाने वाला था. श्रद्धालु श्रोतागणं आज महात्मा जी के लिए दान—दक्षिणा तथा अनेकों उपहार लाए थे. महात्मा जी ने सब लोगों को बहुमुल्य वस्तुएं लिये देखा उनकी निगाहें उस वृद्धा को खोजने लगीं, जो बड़े ध्यान से उनका प्रवचन सुनती थी. महात्मा जी को पक्का विश्वास था, कि आज वह श्रद्धालु बुढ़िया सबसे कीमती वस्तु भेंट करेगी, क्योंकि सब से अधिक प्रेम-पूर्वक वही उनका प्रवचन सुनती थी.

प्रवचन प्रारंभ हुआ. सब लोग महात्मा जी का प्रवचन सुन रहे थे. वह वृद्धा सदा की भांति सबसे पीछे बैठी बड़े ध्यान से महात्मा जी का प्रवचन सुन रही थी. महात्मा जी उस वृद्धा को देख, उत्साह-पूर्वक बारम्बार उसी की ओर देखते हुए प्रवचन करते रहे. बुढ़िया बड़े ध्यान से उनके मुख मंडल की और निहार रही थी. महात्मा जी बहु-मूल्य भेंट प्राप्ति की आस में और उत्साह-पूर्वक प्रवचन करने लगे.

प्रवचन समाप्त हुआ. सब लोग लायी हुई अपनी-अपनी वस्तुएं महात्मा जी को भेंट कर रहे थे. महात्मा जी को सभी भक्त रुपये, पैसे, वस्त्र आदि भेंट करके जाने लगे. अंत में वह वृद्धा धीमे-धीमे कदमों से चलती हुई महात्मा जी के पास आई. उसे अपनी और आते देख महात्मा जी का मन बल्लियों उछलने लगा.

वृद्धा पास आई. महात्मा जी के चरणों [illegible] मस्तक नवाया. फिर उनकी लम्बी-लम[illegible] दाढ़ियों वाले चेहरे को निहारने लगी.

महात्मा जी ने सोचा, शायद यह भेंट [illegible] हुये झिझक रही है. अतः उन्होंने बड़े [illegible] स्नेहिल शब्दों में भरपूर आत्मीयता के स[illegible] कहा, "बेटी, झिझको मत. शरमाने [illegible] क्या बात है? जो कुछ भेंट लायी [illegible] निःसंकोच दे दो."

"महाराज," वृद्धा ने कहा—"मैं [illegible] भेंट-वेंट नहीं लायी".

"क्या ..:.....?" महात्मा [illegible] बेहोश होते-होते बचे. "तो फिर तुम [illegible] मेरी ओर बड़े ध्यान से क्या देखा क[illegible] थीं?"

"महाराज, मेरी एक बकरी थी. कई [illegible] तक मेरे साथ रही. किन्तु एक दिन [illegible] अभागी को एक भेड़िया उठा ले ग[illegible] महाराज, जब आप बोलते हैं, तो आप[illegible] दाढ़ी ऐसे हिलती है, जैसे मेरी बकरी [illegible] हिला रही हो. इसीलिए मैं आपकी [illegible] निहारती थी महाराज. मैं कोई प्रवचन सु[illegible] थोड़े ही आती थी...." बुढ़िया [illegible] असली बात स्पष्ट की. और बेचारे मह[illegible] जी आह भरकर बेहोश हो गये.

पृष्ठ ६ से आगे

एक बड़े स्टेज पर पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन हुआ। राज्यपाल महोदय ने पुरस्कार और प्रमाण पत्र वितरित किए। फोटुएं खिंचीं। अखबारों में खबरें निकलीं और रातोंरात खाकसार चित्रकार बन गया।

मैं मान गया कि खुदा जब देता है तो छप्पर फाड़कर देता है। उसकी इनायत का आदर करते हुए मैंने भी चित्रकार होने का स्वांग भरना शुरू कर दिया। एक रात को बैठकर एक साथ दस बीस और नए चित्र बना डाले।

मेरे घर पर आजकल आने जाने वालों का तांता बंधा रहता है। कभी अखबार वाले तो कभी अकादमी वाले। कभी गैलरी वाले तो कभी कलाप्रेमी। मैं सभी के साथ अच्छा व्यवहार कर रहा हूं यदि उन सबके लिए मेरे घर पर चाय पान और जलपान का उत्तम प्रबंध है।

मैं चित्रकार बनकर सचमुंच बहुत खुश हूं। आए दिन मेरा स्वागत सत्कार हो रहा हूं। पत्रिकाओं में मेरी चित्र कृतियां छप रही हैं। कभी स्वयं चित्रों का एकल प्रदर्शन कर रहा हूं तो कभी निर्णायक बन कर चित्र प्रदर्शिनियों में जा रहा हूं। गरज पे कि बड़े अच्छे दिन गुजर रहे हैं। खूब छन रही है।

राज्य भर की कलादीर्घाओं में मेरी कलाकृतियां पहुंच गयी हैं। स्थायी कला संग्रहालयों में मेरे चित्रों की मांग हो रही है। अनेक नई कला-संस्थाओं का मैं संरक्षक बन गया हूं।

अब चिंता की कोई बात नहीं। आजकल पांचों घी में है और सर कड़ाही में समय की नाजुकता को देखते हुए मैंने अपने कुछ अनुयायी भी बना लिए हैं जो चायपान तो मेरे यहां करते हैं लेकिन मेरा गुणगान बाहर करते हैं। आपसे विनम्र निवेदन है कि आप मेरे अनुयायियों को किसी आपत्तिजनक नाम से संबोधित न करें। अन्यथा मेरी जागीर लुट जाएगी।

आधुनिक चित्रकार के रूप में मेरी प्रतिष्ठा से कुछ लोग जलते भी हैं—लेकिन किस्मत हमारे साथ है जलने वाले जला करें। कभी कभी वे मुझसे विचित्र प्रश्न करते हैं मैं भी उनके विचित्र उत्तर देता हूं। मैं कहता हूं—इस विचित्र संसार में आधुनिक कलाकार सबसे कठिन काम को अंजाम दे रहा है—मन के अन्तर्द्वन्द और संघर्ष को अभिव्यक्ति देना कोई सरल काम नहीं। आधुनिक युगबोध, कुंठा और संत्रास को जीवन्त रूप में पेश करना—किसी दूसरे के वश का काम नहीं।

चित्रकला के मैदान में मेरी मुलाकात मेरे जैसे ही कुछ दूसरे स्वनामधन्य कलाकारों भी हुई है। उनमें से कुछ लोग मेरे खास दोस्त बन गए हैं। उनकी और मेरी लफ्फाजी से लोग काफी त्रस्त हैं। मगर हमारे सम्मान में दिनोंदिन वृद्धि [illegible] रही है। बिना हींग और फिटकरी के रंग चोखा [illegible] रहा है।

इसी दौरान मैंने आधुनिक चित्र निर्माण [illegible] एक नई तकनीक विकसित की है। जब भी [illegible] नया चित्र बनाना होता है तो मैं कैनवास पर [illegible] बिखेरकर बारी बारी घर की बिल्ली और [illegible] पिल्ले को अपने पास बिठा लेता हूं। रंग सू[illegible] से पहले वे स्वतंत्रता के साथ कैनवास पर च[illegible] और उठते बैठते हैं कुछ ही देर में चित्रकृति [illegible] निर्माण हो जाता है।

इस बार मैंने उनकी सहायता से कोई डेढ़ [illegible] आधुनिक चित्रों का निर्माण कर लिया है जि[illegible] मुझे कोई तीन लाख रुपया प्राप्त होने की उम्[illegible] है। उसके बाद मेरी गिनती देश के बड़े चित्र[illegible] में होने लगेगी। प्रदर्शनी के उद्घाटन का [illegible] तय हो चुका है। राज्यपाल महोदय फीता काट[illegible] हैं— उनकी कैंची चली. मगर यह [illegible] ....क्या यह सब सपना था अनाचनक [illegible] सिलसिला टूट गया—चित्रकार बनने का [illegible] सपना मटियामेट हो गया।

जब से मेरा सपना टूटा है—मैं परेशान [illegible] लेकिन सोचता हूं— परेशान होने से क्या होग[illegible] सपना आखिर सपना है।

हर रंग में उमंग... कालिंक के संग.
बच्चों के इस खूबसूरत शौक को
ज्यादा उभारिए–उनकी कला और कल्पना
को और निखारिए–कालिंक रंगों की
रंगबिरंगी बहार से। कालिंक उत्तम क्वालिटी
के रंग है जो ज्यादा टिकाऊ, ज्यादा चमकीले,
ज्यादा सजीले होते हैं। कागज पर फैलते नहीं,
और सूखते भी जल्दी है।
सुन्दर रंगों की सुन्दर दुनिया
–कालिंक ने सज़ाई।
आर्ट मास्टर
कलर बाक्स
पोस्टर व
वाटर कलर
COLINK OIL PASTEL
CRAYONS
निर्माता
कालिंक इन्डस्ट्रीज
नई दिल्ली-११००१५

टाईम मशीन

कुछ दिन पहले की बात है, एक टाईम मशीन मोटू-पतलू और उनके साथियों के हाथ लग गई थी और उसमें सवार होकर वे अपने साथियों समेत दो हज़ार साल पीछे के युग में पहुंच गये थे. आज के मशीन और एटमी युग से बहुत अलग वह बहुत पिछड़ा हुआ जमाना था. उस समय धरती पर दूर-दूर तक फैले हुये घने जंगल थे. उन जंगलों में भयंकर नर-भक्षी पेड़ थे मोटू-पतलू अपने साथियों समेत जब एक ऐसे जंगल से गुजर रहे थे तो वहां एक नर-भक्षी पेड़ ने डाक्टर झटका को पकड़ कर उसे जिन्दा निगल लिया था. पेड़ के पेट में एक बहुत बड़ा कीड़ा रहता था जो डाक्टर झटका से अपने बच्चों की तरह प्यार करने लगा था. उधर जंगल पार करके दूसरी ओर पहुंचने पर मोटू, पतलू, चेला राम और जूडो मास्टर तो बहुत आगे निकल गये थे, घसीटा राम उनके पीछे- पीछे लटक रहा था. चलते-चलते घसीटा राम एक पहाड़ के पास से गुज़रा तो वहां एक गुफा की झिरी में से चमकता हीरों का खजाना देख चौंक पडा. बड़ी चट्टान हटा कर गुफा का दरवाजा खोलना उसके बस की बात नहीं थी. इसलिये वह जैसे-तैसे अपने कपड़े फड़वाता हाथ-पांव तुड़वाता झिरी के रास्ते ही गुफ़ा के अन्दर घुस गया और अपनी कमीज उतार कर उसमें बहुत से हीरे भर लिये. जब वह हीरों की गठरी लेकर पलटा तो अब गुफा का दरवाजा खुला हुआ था और घसीटा राम का स्वागत करने के लिये वहां एक आँख वाला एक बहुत बड़ा दैत्य मौजूद था. दैत्य से जान बचा कर घसीटा राम फिर गुफा के अन्दर भाग आया. दैत्य ने गुफा के अन्दर हाथ घुसा कर उसे पकड़ने की कोशिश की. पर गुफा इतनी लम्बी थी कि दैत्य का हाथ उसक अन्दर आखीर तक नहीं पहुंच सकता था. तंग आकर दैत्य ने चट्टान खिसकाई और बाहर से गुफा का दरवाजा फिर बन्द कर दिया. और घसीटा राम वहीं गुफा के अन्दर बन्द होकर रह गया.

दूसरी ओर मोटू, पतलू, चेला राम और जूडो मास्टर की समझ में नहीं आ रहा था कि डाक्टर झटका और घसीटा राम कहां गायब हो गये. चलते-चलते अब वे एक नगरी में पहुंचे तो वहां पूछने पर पता चला कि वह झटपट राजा की खटपट नगरी है. वहां उन्होंने देखा कि एक आदमी मकान की सीढ़ियों पर बैठा रो रहा है. और वहां लोगों की भीड़ लगी है. पूछने पर पता चला कि हर रोज एक आदमी को राजकुमारी से विवाह के लिये झटपट राजा के महल में जाना होता है. आज इस आदमी की बारी है. पतलू इस बात पर चकरा गया. राजकुमारी से विवाह. और यह रोना-धोना यह तो बड़े

सौभाग्य की बात समझी जानी चाहिये. यह सोच कर पतलू खुद राजकुमारी से विवाह करने को तैयार हो गया. उसे लोगों ने दुल्हा बनाया और उसकी बारात लेकर राजमहल में जा पहुंचे. वहां राजा ने पतलू को विवाह की यह शर्त बताई कि जो एक आँख वाले धूमकेतवे को मारेगा राजकुमारी से उसी का विवाह किया जायेगा. यह शर्त पूरी करने के लिये पतलू का सामना जब धूमकेतवा नाम के भारी भरकम दैत्य से

वैसे भी मरना तो यहाँ हर हालत में है. देख इस गुफा में भूखे-प्यासे कैद रह कर मेरा क्या हाल हो गया है. यह दैत्य का बच्चा कभी-कभी यहाँ भेड़ बकरियां बन्द कर देता है तो उनका दूध मिल जाता है पीने को वरनाभूखं ही रहना पड़ता है.

तेरे पास तलवार है और तू बचपन से ही बड़ा बहादुर है. पतलू भाई, कोई पानीपत की लड़ाई वाला हाथ दिखा कर इसका सफाया करदे.

मैं क्या हाथ दिखाऊंगा वह पांव दिखा रहा है अपना, हमें कुचलने के लिये और मुझे तलवार चलानी क्या तलवार उठानी भी नहीं आती.

तूने कई बार रामलीला में काम किया है और रावण की सेना में भर्ती होकर तलवार चलाई है. ले तलवार संभाल और चढ़ जा बेटा सूली पर.

नहीं तो तू वह हाथ दिखा जो मैदानेजंग में सिकन्दर ने दिखाये थे.

नहीं तू आगे बढ़. तू सिकन्दर का मुकद्दर और मुकद्दर का सिकन्दर है.

उधर पतलू और घसीटा राम गुफा में फंसे हुये थे. इधर मोटू, डाक्टर झटका और चेला राम झटपट राजा के दरबार में पहुँचे हुये थे और बेवकूफ राजा फैसले करने में लगा हुआ था.

महाराज यह कहता है, हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और.

हम कलवा धोबी को यह सजा देते हैं कि अब से यह अपने गधे को बादाम का हलवा दूध, मलाई और खीर खाने को दे और खुद घास खाकर गुजारा चलाये.
महाराज, यह नदी पर नंगा नहा रहा था.
इसे कपड़े पहना कर और इसकी कमर पर पत्थर बांध कर इसे नदी में डुबो दिया जाये.
महाराज, यह महल के सामने गर्दन अकड़ा कर चल रहा था.
इसके हलक में बाँस दे दिया जाये ताकि इसकी गर्दन सदा के लिये अकड़ी रहे.
महाराज सेनापति ने बीमारी की छुट्टी मांगी है.
सेनापति को फांसी चढ़ा दिया जाये. झटपट राजा की खटपट नगरी में बीमार सैनापति नहीं चलेगा.
महाराज, जनता से कर वसूली के बाद इस साल खजाने में बहुत कम रुपया आया है और राज महल के खर्चे पूरे नहीं पड़ रहे हैं.
ऐसा वित्त मंत्री की हराम खोरी के कारण हुआ है. उसे फाँसी पर लटका दिया जाये.
महाराज, राजकुमारी का स्वास्थ्य दिन-ब-दिन गिरता जा रहा है
यह स्वास्थ्य मंत्री की लापरवाही के कारण है, उसे फाँसी पर लटका दिया जाये.
जो आज्ञा महाराज !
और कोई मुकदमा ?
सब मुकदमे समाप्त हुये महाराज !
झटपट राजा ने क्या झटापट और खटापट मुकदमों के फैसले किये हैं.
और क्या फटाफट लोगों को फांसी पर लटकाया है.
ऐसी जगह से तो जितनी जल्दी भाग लो उतना ही अच्छा है.
यह मोटा करेला कौन है ? इसे यहाँ लाओ.
मेरा तो कोई मुकदमा नहीं है महाराज.

सेनापति के फाँसी चढ़ने के बाद हमारे राज्य में एक बहुत बड़ा पद खाली हो गया है तुम बहुत शक्तिशाली और मोटे ताजे दिखाई दे रहे हो. इसलिये आज से हम तुम्हें अपना सेनापति नियुक्त करते हैं.
चलो शुक्र है. पतलू राजकुमारी का पति नहीं बन सका पर मोटू सेनापति तो बन गया.
अब उस आँखों के अंधे को इधर आने दो.
म तुम्हें अपना नया स्वास्थ्य मंत्री बनाते हैं. इस पद के लिये हमें अंधा आदमी इसलिये चाहिये कि यदि हमारा स्वास्थ्य मंत्री आँखों वाला हुआ तो वह राजकुमारी का स्वास्थ्य देखते ही परलोक सिधार जायेगा.
इस दाँतो वाली गिलहरी को हम अपना नया वित्त मंत्री नियुक्त करते हैं. इस पद के लिये हमे एक-एक पैसा दाँत से पकडने वाला आदमी चाहिये.
हाराज ने हमें इतने बड़े पदों पर नियुक्त किया है, फिर भी पता नहीं हम रो क्यों रहे हैं ?
इन पदों पर हम से पहले जो लोग थे, उनका अंजाम सोच कर
मोरारजी देसाई, चौधरी चरण सिंह, बाबू जगजीवन राम और राज नारायण ऐसे पदों के लिये कैसे एक दूसरे की टाँगें खींचा करते थे और कीचड़ उछालते थे. दो हजार साल पीछे के युग मे इतने बड़े मंत्री बन कर भी खुश नहीं हैं.
हाराज की जय हो. अभी-अभी खबर मिली है महाराज, चक्करपुर राज की फौजों ने खटपट राज पर चढ़ाई कर दी है. उसकी सेनायें सोना दी पार करके मारी राजधानी ओर बढ़ ही हैं
सेनापति को युद्ध के लिये तैयार करो.
सैनाओं को तैयार करो या सैनापति को तैयार करो.
होगया अपना बोलो ही राम
(क्रमशः)
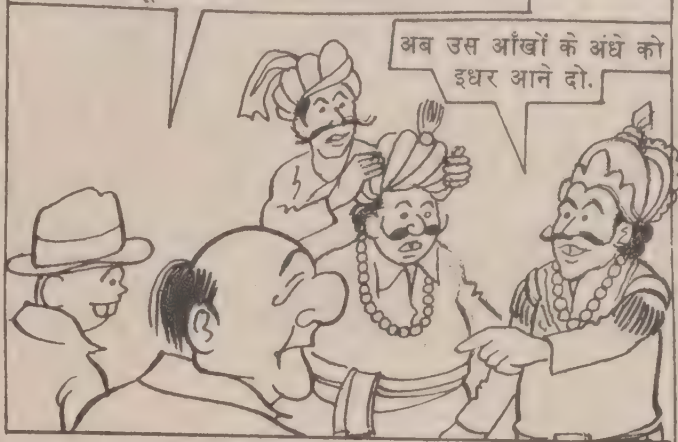
'हम और नुकसान नहीं करेंगे, ह्यूगो ने झुक कर कहा और वह सन्तुष्ट हो हो गई ।

पहले ही यह लोग गुप्त स्थानों की खोज में सारी दीवारें खोद चुके थे इसलिए अब प्रतीक्षा के अतिरिक्त कुछ नहीं किया जा सकता था।' जों नामक व्यक्ति कार लेकर टेप रिकार्डर लेने गया था और लगभग एक घंटे में वह भारी मशीन लिए वापिस आ गया ।

'यह रही मशीन, उन बुजुर्ग महाशय ने इस पर टेप भी चढ़ा दिया है सो अब केवल चलाने भर की देर है।

'बहुत अच्छे' ह्यूगो बोला राजू की ओर मुड़ उसने पूछा, क्या तुम यह मशीन चलाना जानते हो ।

'हां जनाब ! उसने मशीन का केस खोल बिजली के तार बाहर निकाल उसे प्लग कर दिया ।

पहले कमरे को उसकी पहली शक्ल में कर देते हैं मेरा मतलब सब तो वैसा नहीं हो सकता परन्तु चित्र और शीशा तो यथा स्थान टांग ही सकते हैं और कुछ किताबें भी शैल्फों पर रख देते हैं।

ह्यूगो इसके खिलाफ था पर फिर कुछ सोच चुप हो गया ।

'लोगो जैसा कह रहे हैं वैसा ही करो'''उसने कहा कुछ ही क्षणों में दोनों आदमियों ने मिल किताबें सजा दीं और चित्र तथा शीशा यथा स्थान टांग दिया। और पीछे हट प्रतीक्षा करने लगे ।

'अब कुछ करो' मेहरबानी करके ह्यूगो बेचैनी से बोला' मुझे लगता है हम समय नष्ट कर रहे हैं पर कोशिश कर देखते हैं ।

''जी हां श्रीमान! राजू टेप को बहुत धीमी आवाज़ में चला कर सुन रहा था जबकि दूसरे लोग कमरे को ठीक ठाक करने में व्यस्त थे। उसने टेप पर वह स्थान ढूंढ़ लिया था जहां से चीख आरम्भ होती थी और उसने टेप को वापिस लपेट दिया था।

''अब मैं तैयार हूं''वह बोला ''सब कृपया बिलकुल चुप रहें''।

उसने टेप चालू कर आवाज तेज कर दी, एक औरत और आदमी के बीच कुछ वार्तालाप हुआ और फिर चीख आरम्भ हुई तेज़, बेबस और डरावनी! वह कमरे में गूंज गई और अन्तिम बेबसी की ध्वनि के साथ शान्त हो गई।

सब लोग किसी द्वार या गुप्त पैनल के खुलने की प्रतीक्षा में खड़े थे। परन्तु ऐसा कुछ भी नहीं हुआ।

''मुझे मालूम था! हयूगो बोला ''मैं तुम्हें बता सकता हूं लड़के। इस कमरे में कोई ऐसा स्थान नहीं है जहां पांच मूल्यवान चित्र छिपाये जा सकें, कोई ऐसी जगह नहीं है।''

''मेरे ख्याल से है,'' राजू ने आक्समिक उत्साह से कहा ''उस ने कुछ ऐसा देखा था जिसकी ओर किसी और का ध्यान नहीं गया था और उसे मालूम हो गया था चित्र कहां छिपे हैं। अब केवल उस की थ्योरी को प्रमाणित करना रह गया था।

''एक बार और प्रयास करते हैं, हो सकता है आवाज़ काफ़ी तेज़ न हो'' राजू बोला।

उसने स्वर का बटन पूरा घुमा दिया और टेप को दुबारा लपेट कर चीख आरम्भ की।
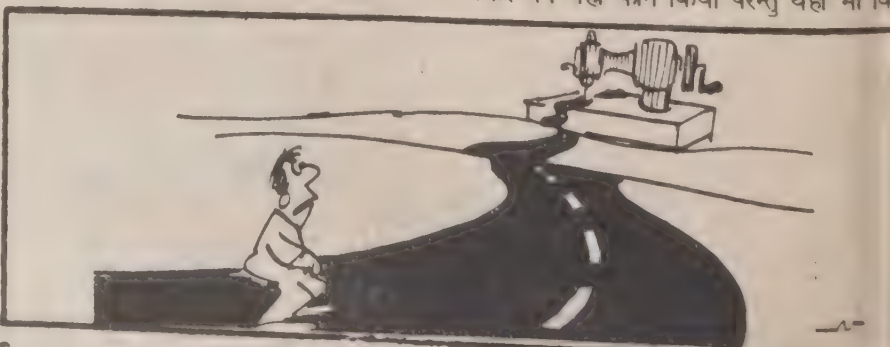
इस बार चीख इतनी तेज थी कि सबने [illegible] कानों पर हाथ रख लिये। चीख का स्वर तेज़ और तेज होता गया, जब कि उसे सहना असं[illegible] हो गया और, तब वह हुआ।

दीवार पर लगा शीशा सैंकड़ों टुकड़ों में च[illegible] गया और चूर-चूर हो कर पूरे फर्श पर बि[illegible] गया। देखते-देखते शीशे के स्थान पर के[illegible] फ्रेम रह गया जिसमें शीशे का एक आध टु[illegible] फंसा रह गया था। जहां शीशा था वहां था अति सुन्दर चित्र! अभी सब लोग चित्र की देख ही रहे थे कि आगे को गोल मुड़ कर फर्श पर गिर पड़ा और एक के बाद एक चार चित्र ऐसे ही फ्रेम में से गिरे जो की बहुत सावधानी से मुंह देखने वाले शीशे और फ्रेम बीच दबा कर छिपाये हुए थे।

आखिर चिल्लाने वाली घड़ी का मक[illegible] समझ आ ही गया!

शीशे के टुकड़ों की परवाह न करते हयूगो ने आगे बढ़ झपट कर चित्र उठाया काली सतह पर एक अत्यन्त सुन्दर चित्र थ[illegible]

''चित्र!'' वह विजयोल्लिसित [illegible] चिल्लाया ''ढाई लाख डालर के [illegible] आखिर मुझे मिल ही गये। 'ठीक इसी [illegible] लायब्रेरी का द्वार खुला और पीछे से एक [illegible] स्वर सुनाई दिया, ''अपने हाथ ऊपर [illegible] तुम सब को गिरफ्तार किया जाता है।

स्तब्ध सन्नाटा छा गया, इन्होंने भीतर [illegible] वालों की ओर मुड़ कर देखा। दो पुलिस[illegible] रिवालबर ताने खड़े थे, उनके पीछे थे पु[illegible] चीफ रन्धावा और महिन्दर के पिता मि. सिं[illegible] महिन्दर भी पीछे-पीछे इन लोगों के साथ कमरे में दाखिल हुआ।

''राजू!'' महिन्दर ने अधीरता से [illegible] ''तुम ठीक तो हो न। मुझे नींद नहीं आ[illegible] तुम्हें कुछ बताना चाह रहा था, इसलिये तुम्हारे घर फोन किया। तुम्हारे अंकल ने [illegible] तुम श्याम के घर हो और श्याम की मम्मी ख्याल था तुम दोनों तुम्हारे ही घर में हो रा[illegible] मैंने हैडक्वाटर में फोन किया तुम वहां भी [illegible] थे, फिर मैं हैडक्वाटर आया कि देखूं [illegible] कोई संदेश तो नहीं रखा है और वहां घ[illegible] वाले कमरे के विषय में तुम्हारा संदेश [illegible] फिर मैंने यहां फोन किया परन्तु यहां भी कि[illegible]

ने फोन नहीं उठाया।''

''तब मुझे चिन्ता हुई मैंने अपने पिता से कहा श्याम का और तुम्हारा कहीं पता नहीं लग रहा तो उन्होंने चीफ रन्धावा को फोन किया। हम सब मिल कर यहां खोज करने आये थे और लगता है बिल्कुल ठीक समय पर पहुंचे हैं।''

चीफ रन्धावा ने आगे बढ़ कर ह्यूगो के हाथ से चित्र लिया और उसे ध्यान से मेज पर फैला कर देखा।

''यह चित्र दो वर्ष पूर्व एक गैलरी से चुराया गया था इस चित्र की नकल के फोटो पुलिस थानों में भेजे गये थे मुझे पक्का याद है।''

वह राजू की ओर मुड़े।

''मुझे कुछ ऐसा ही लग रहा था कि कोई बड़ा चक्कर है'' वह बोले ''मुझे कल की बात भी याद है जब किसी ने श्याम का पीछा कर उसकी कार से कुछ चुरा लिया था, तभी मुझे लगा था तुम लोग किसी बड़े चक्कर के पीछे पड़े हो। ऐसा प्रतीत होता है हम लोग बिलकुल ठीक समय पर चोर को चोरी के माल के साथ पकड़ने आ गये हैं।''

राजू ने मुड़ कर मि. ह्यूगो की ओर देखा। यह जानते हुए कि यह कला का चोर कई वर्ष

मदहोश

तक पुलिस को चकमा देने के बाद पकड़ में आया है, हयूगो अत्यन्त शांत दिखाई दे रहा था, वास्तव में वह मुस्कुरा ही रहा था। अब उसने हाथ नीचे कर सिगार निकाल कर जलाया। ''कृपया मुझे यह तो बताइये, मेरा क्या जुर्म है? वह बोला।

''ठीक! शुरू में तो चोरी का माल पास में पकड़ा जाना ही काफ़ी है! चीफ रन्धावा बोले बाद में शायद अपहरण, अपूर्व क्षति—ओह आप के तो बहुत से जुर्म हैं!''

''वाकई!'' हयूगो ने सिगार का कश खीचते हुए कहा ''प्रिय मित्र, बिना सोचे समझे इलजाम न लगाओ। मैं यहां जनहित के लिये चंदू घंटे द्वारा छिपाये चित्रों की खोज में आया था—यह लड़का—राजू की ओर इशारा करते हुए उसने कहा ''आप लोगों को बताएगा कि यह और इसके साथी आपनी इच्छा से मेरी सहायता कर रहे थे।''

''इस कमरे की क्षति यहां की देखभाल करने वाली महिला की इजाजत से की गई है। चित्रों को ढूंढ़ना अनिवार्य था, सो अब चित्र मिल गये हैं, हम उन्हें आप को देते हैं और इजाजत चाहते हैं।

''एक क्षण रुकिये''—चीफ रन्धावा ने कहना आरम्भ किया।

''इन्हें बता दो की मैं बिलकुल सच कह रहा हूं' मि. हयूगो ने राजू से विनती की!

''चीफ रन्धावा'' राजू अनमना सा बोला ''हम यहां अपनी इच्छा से आये हैं और मि. हयूगो छिपाये हुए चित्रों को ढूंढ़ रहे थे यह सब बिलकुल सच है''।

''परन्तु हम, उसे खूब जानते हैं चित्र मिल जाने पर वह उन्हें अपने ही पास रख लेता'' चीफ रन्धावा बोले।

''यह तो आपकी अपनी धारणा है ''ह्यूगो बोला ''आप इसे साबित नहीं कर सकते इसलिये अब आप हमें क्षमा करें तो हम छुट्टी चाहते हैं।

मुझे मालूम है आप हमें गिरफ्तार नहीं करेंगे क्योंकि ऐसा करने से मैं आप पर झूठी गिरफ्तारी करने का 'एक लाख डालर का मुकदमा कर दूंगा और उसे जीत लूंगा।''

उसने अपने साथियों की ओर इशारा किया जो अब भी घबराये हुए हाथ ऊपर कर खड़े थे।

''आओ भई! अब हमारी यहां जरूरत नहीं है हम नमस्कार कर चलते हैं।

''अच्छा! अच्छा! एक मिनट रुको!'' एक पुलिसमैन बोला ''तुम इतनी आसानी से खिसक नहीं पाओगे। कुछ भी हो इन लोगों को तो पुलिस का भेस भर धोखा देने के लिये गिरफ्तार किया ही जा सकता है।

''वाकई! मि. हयूगो ने उबासी लेते हुए कहा, ''फ्रेंड जरा आगे आओ। अब आप सज्जन कृपया इन की यूनिफोर्म पर लिखे शब्द देखें यू.पी.पी.।'' ''चीफ रन्धावा ने चक्कर में पड़ते हुए पढ़ा।

''ठीक, यू.पी. पुलिस! यह लोग तो एक्टर हैं जिन्हें मैंने खोज में सहायता के लिये किराये पर साथ ले लिया था, यह लोग यू पी पुलिस के डिपार्टमेन्ट की यूनिफोर्म पहन रहे हैं जो यहां से बहुत दूर है। यह तो मेरा एक सीधा सादा मजाक है, आप नहीं कह सकते कि यह लोग दिल्ली, पुलिस की वर्दी पहने हैं और वैसे यह लोग यू. पी. पुलिस की वर्दी भी नहीं पहने हैं।''

राजू ने ध्यान से वर्दी देखी तो उसे भी समझ आया, पूरे समय वह यही समझे था कि इन लोगों ने दिल्ली पुलिस की वर्दी पहनी हुई है।

''आओ! मि. हयूगो बोले और दरवाजे की ओर बढ़ चले। चीफ रन्धावा अपना सिर खुजाने लगे।

''हद हो गई यदि मैं इन्हें गिरफ्तार करने की कोई तरकीब न सोच पाया, तो फिर इन्हें जाने ही देना पड़ेगा'' चीफ रन्धावा बोले।

राजू ने ह्यूगो की सराहना में एक बार फिर सिर हिलाया। हयूगो को वे चित्र तो नहीं मिल पाये जिनके पीछे वह पड़ा हुआ था परन्तु खिसक वो बिलकुल सफाई से रहा था।

''तुम्हारे साथ काम करने में मुझे बहुत प्रसन्नता हुई बेटे''। वह बोला, ''मुझे केवल दुःख यही है कि हम दोनों व्यवसायिक रूप से मिल कर कार्य नहीं कर सकते। मेरी ट्रेनिंग से तुम्हारा भविष्य संवर सकता था फिर भी मुझे विश्वास है हम दुबारा किसी दिन अवश्य मिलेंगे।

अगले ही क्षण बाहर का द्वार खुल कर बन्द हो गया, मि. हयूगो और उनके साथी जा चुके थे। चीफ रन्धावा अभी भी अपना सिर खुजा रहे थे।

''अच्छा! वह बोले, ''मेरे ख्याल से अब कुछ सफाई दो राजू यह सब है क्या चक्कर?

राजू ने एक लंबी सांस ली।

''जी, चीफ साहब, यह सब एक चीखने वाली घड़ी से आरम्भ हुआ था हुआ ऐसें''

और राजू बहुत देर तक चीफ को सारा वृतांत सुनाता रहा।

समाप्त

बन्द करो बकवास
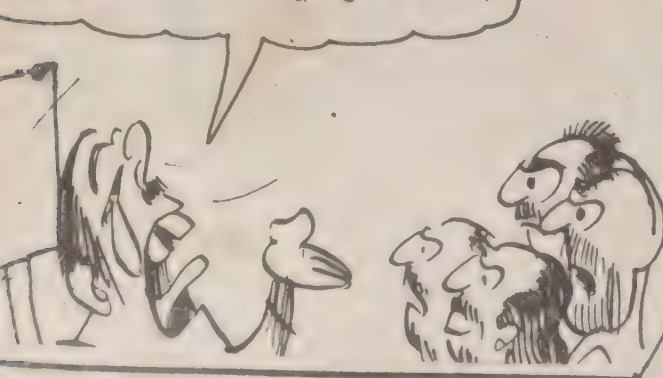
सिविलियन इनसिगनिया-पिप्स

हाल के वर्षों में यह महसूस किया जाने लगा है कि सेना और गैरसैनिक जनता में पहले जैसा अपनत्व व मेलजोल तथा सहयोग की भावना नहीं रही है। दो अलग अलग असमान हितों वाले वर्गों में बंट से गये हैं। मानसिक स्तर प्र सैनिकों और गैरसैनिकों के बीच खाई बढ़ती जा रही है। सैनिक क्षेत्रों में इस विषय पर चिन्ता प्रकट की जा रही है। जनता व सैनिक एक दूसरे की उपेक्षा करने लगे हैं। इस खतरनाक प्रवृत्ति को और बढ़ाने से कैसे रोका जाये? दीवाना सम्पादकीय विभाग ने इस विषय पर अपने रिसर्च विभाग से रिसर्च करवाया। रिसर्च रिपोर्ट कहता है कि जनता व सैनिकों के बीच भेद पैदा करने वाली पहली चीज सैनिकों की वर्दी है। अब जनता से एक डिजायन की वर्दी पहनने के लिये तो कहा नहीं जा सकता। हां, एक काम हो सकता है। जिस प्रकार सैनिक कंधों या बांह पर अपना विभाग या पदवी दर्शाने के लिये पिप्स या इनसिगनिया पहनते हैं सिविलियन भी उन्हें अपना लें। सिविलियन पिप्स/इनसिगनिया उनका धंधा, संदेश, आदत मानिसक स्थिति आदि कई पहलू व विषय दर्शा सकते हैं। सेना के तीनों अंगों में प्रयोग किये जाने वाले इनसिगनियों को आधार बना कर हमने सिविलियनों के लिये भी कुछ डिजायन तैयार किये हैं। अगर सिविलियन इन्हें पहनना आरम्भ कर दें तो सैनिक व गैर-सैनिक एक दूसरे के निकट आयेंगे।
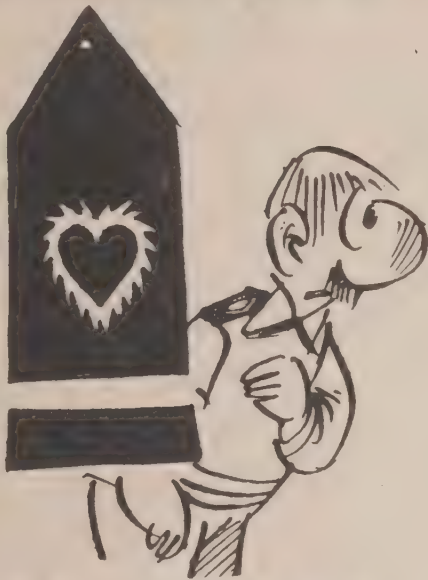
मुझे एक बार दिल का दौरा पड़ चुका है। (दूसरा दौरा पड़ने पर बीच में दो सफेद पट्टियां होंगी)।

मैं अपने बाप के पैसे उड़ा रहा हूं।
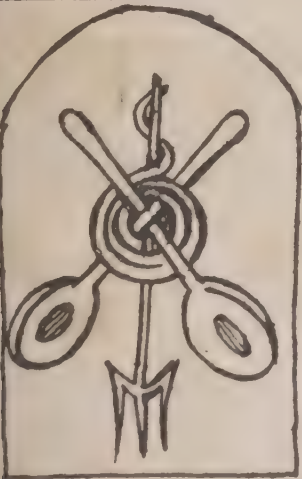
मैं चमचा हूं। मेरी सेवाओं का लाभ उठाइये
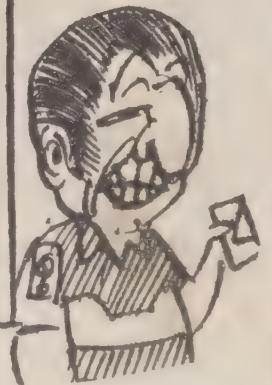
मैं जिन्दगी से निराश हूं कभी भी पंखे से लटक कर आत्महत्या कर सकता हूं।

मैं शुद्ध वैजिटेरियन हूं।
(यह इनसिगनिया पेट के पास पहना जाये)

मैं जेल से फरार हुआ कैदी हूं।।

मैं प्रेम में धोखा खा चुकी हूं।

मेरा एक लड़की से चक्कर चल रहा है।
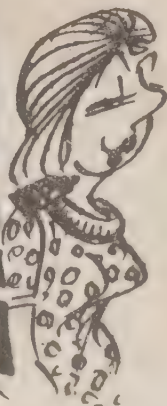
मैंने नसबन्दी करवा रखी है।

मैं अब तक दो बार प्रेम कर चुकी हूं।
(जैसे-जैसे प्रेम की संख्या बढ़ेगी बीच की काली पट्टियों की संख्या बढ़ेगी)
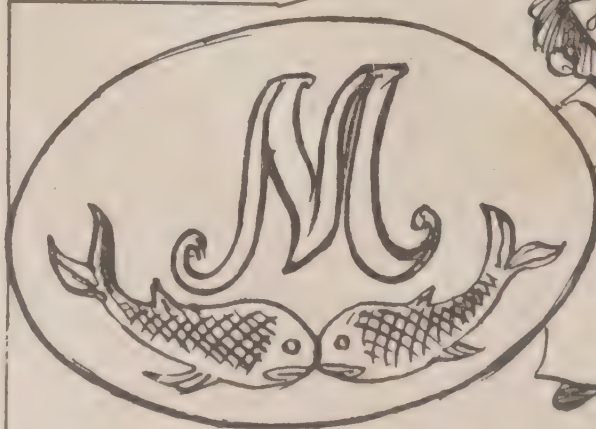
मैं मीट-मच्छी खाता हूं।
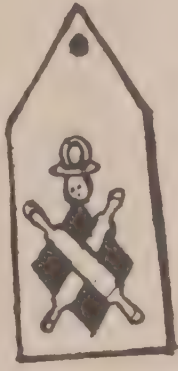
मैं शादी शुदा व बाल बच्चे वाला हूं।

मेरा इरादा प्रेम विवाह करने का है।

मैं एक तलाक शुदा स्त्री हूं।

मैं बेकार हूं।
(इनसिगनियां के बीच मक्खी का चित्र देखिये।
बेकार मक्खियां मारते हैं न?)
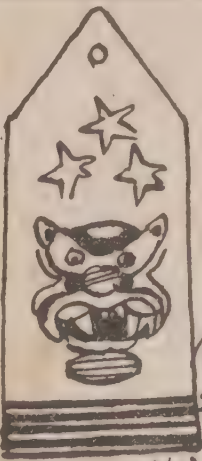
मुझे पागल कुत्ते ने काटा है। मुझसे न उलझना।

लड़कियां छेड़ने पर मैं पिट चुका हूं।

मैं अपने मुहल्ले में एटमबम के नाम से जानी जाती हूं।
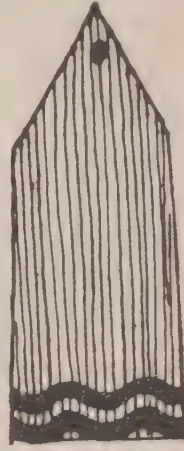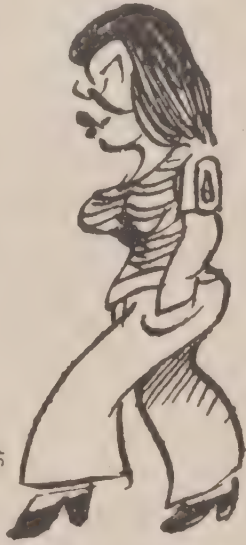
आज हमारे इलाके में पानी का प्रैशर कम था। (शेव न करने व न नहाने के कारण मुझसे बदबू आये तो मेरा कसूर नहीं)

मैं जहां तवा परात देखता हूं वहीं ल्गर डालता हूं।

मैं हलवाई हूं।
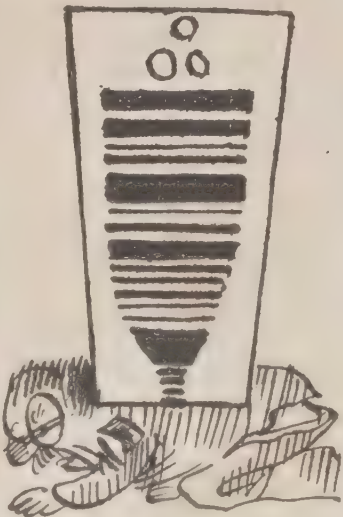
मैं शराब के नशे में धुत्त हूं।

मुझे दहेज की लालची सास द्वारा जला कर मारे जाने की आशंका है।
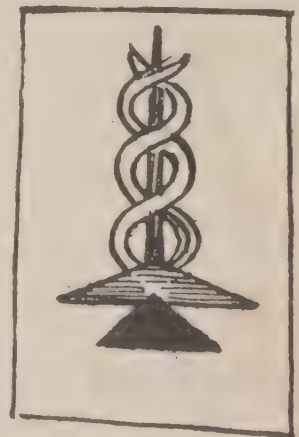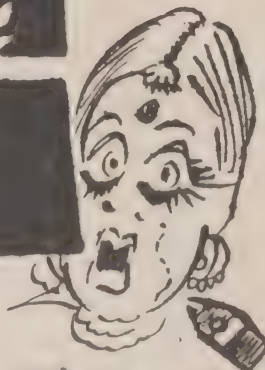
परिवार नियोजन के लिये मेरा विश्वास लूप में अधिक है।

प्र· बिल्ली की आंख रात में क्यों चमकती हैं ?

कृष्ण राजगिरि 'नवीन'—दुलियाजान, असम

उ. : बिल्ली की आंखें हमें रात को चमकती हुई इसलिए दिखाई देती हैं कि मनुष्य की आंख की तरह वह भी गोलाकार होती हैं परन्तु वह हमारी आंख के विपरीत उतनी सिर से बाहर होती हैं जितनी हमारी सिर के अन्दर। इसकी वजह से उसकी आंख का एक बड़ा भाग रोशनी के सपर्क में आता है और इस प्रकार उसकी आंख से रोशनी अधिक प्रतिबिम्बित होती है और हमें ऐसा प्रतीत होता है कि उसकी आंख चमक रहीं हैं।

प्र. : क्या भूतकाल में कलकत्ता भारत की राजधानी थी ?

रमानी हीरा लाल जी

उ. : कलकत्ता अंग्रेजों के राज्य काल में अठारहवीं सदी के अन्त से सन् 1911 ई. तक भारत की राजधानी रहा।

प्रश्न—क्या हमारे शरीर में कोई ऐसा सिस्टम है जो हमें रोज सवेरे एक ही समय पर जगाता है ?

उत्तर—क्या हमें वास्तव में हर सुबह उठने के लिए अलार्म की चीख की आवश्यकता होती है ? केरोलीना मेडिकल सेन्टर के साईक्वाट्रिस्ट मि. विलियम विलसन का कहना है, 'नहीं !' विलसन द्वारा 20 वर्ष तक की गई खोज से पता चलता है कि हम सब के भीतर हमारी अपनी अन्दरूनी अलार्म घड़ी होती है। कोई भी ट्रेन्ड मस्तिष्क हमें किसी भी समय जगा सकता है—यह केवल इच्छा और कार्य करने पर निर्भर है।

विलियम और उनके साथी जंग ने कुछ लोगों के निर्धारित समय पर जाग सकने की शक्ति का परीक्षण किया। निर्धारित समय के दस मिनट के भीतर जागने वालों को अतिरिक्त पैसों का इनाम दिया जाता था।

उनमें से अधिकतर कितनी भी जल्दी उठने में सफल हुए थे। सारी किस्म की बाह्य आवाजें सोने वालों के पास से हटा दी गई थीं। इस प्रकार परीक्षण करने वालों का निष्कर्ष निकला कि इन लोगों को ठीक समय पर उठाने के लिए अवश्य ही कोई भीतरी प्रणाली कार्यरत है। प्रश्न है वह कैसे कार्य करती है ?

विलसन का मत है कि हमारी निद्रा में एक नब्बे मिनट का चक्र चलता है, और इसी से समय का अन्दाजा होता है। बेशक दूसरे और समय चक्रों का विकास भी सम्भव है। विलसन के अनुसार हर व्यक्ति इस अन्दरूनी मशीन का प्रयोग कर सकता है।

सोते समय हुई अजीब आवाजें हमें अचानक जगा देती हैं जबकि रोज-रोज होने वाला एक प्रकार के सोर का हमारी निद्रा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

विलसन का कहना है हर व्यक्ति सोते समय कुछ न कुछ होश में होता है कुछ आवाजें हमें केवल थोड़ा सा प्रभावित करती हैं परन्तु कुछ दूसरे शोर हमें जगा देते हैं।

इनके अनुसार स्त्रियां पुरुषों से जल्दी जाग जाती हैं। इनका कहना है कि लगभग हर आयु की स्त्री बच्चे के रोने के स्वर से जाग उठती है जब कि पुरुष पर इसका प्रभाव तभी होता है जब वह पिता हो।

प्र. : समुद्र में मछलियां अपनी रक्षा कैसे करती हैं ? तथा समुद्रों में पाई जाने वाली कुछ अनोखी मछलियां।

उ. : समुद्रों के पानी की गरम सतह पर धूप में आलस्य पूर्ण तरीके से बहती एक बड़ी सी मछली दिखाई देती है नाम है 'सनफिश'। ऐसा प्रतीत होता है इस मछली के पूंछ है ही नहीं। यह आठ फुट व्यास के बड़े पहिये के समान दिखाई देती है। वजन भी इसका कुछ कम नहीं हैं सात-आठ हट्टे-कट्टे आदमियों के बराबर।

इन्हीं समुद्रों में एक अद्भुत हथौड़े के समान सिर वाली मछली भी दिखाई देती है। इसका सिर हैम्बर या हथौड़े के समान होता है उसका शरीर इसके हैंडल जैसे दिखाई देता है। आंखें हथौड़े जैसे सिर के दोनों सिरों पर होती हैं।

छोटा सा सीहोर्स कहलाने वाला पानी का जीव बड़ी शान से सीधे ही पानी में तैरता है। अपनी बन्दर जैसी पूंछ को यह पानी की वनस्पती में फंसा लेता है। इसके शरीर से समुद्री वनस्पति जैसे ही कांटे तथा मांस की झिल्लियां सी उत्पन्न हो जाती हैं और इसे उस वनस्पति में से ढूंढना नामुमकिन हो जाता है।

'ट्रंकफिश' अपने हड्डियों के कवच में अत्यन्त सुरक्षित होती है। यह कवच मोटे-मोटे पड़े स्केल्स का बना होता है केवल ट्रंकफिश का सिर और पूंछ ही इस कवच से बाहर होती हैं।

एक भूखी मछली जब 'पक्करफिश' को खाने आगे बढ़ती है तो बड़ी दुविधा में पड़ जाती है क्योंकि अचानक एक समस्या सामने आ जाती है, खाने के लिए ज्योंही यह मछली अपना मुंह खोलती है पक्करफिश पानी और हवा को अपने अन्दर भर गुब्बारे के समान फूल जाती है जिसे खाना मुमकिन नहीं होता। और यह पैर ऊपर सिर नीचे कर पानी में तैरती है।

पोरक्यूपाईन फिश भी पक्करफिश की ही सम्बन्धीं है यह अपने को फुलाने के साथ-साथ शरीर के साही जैसे कांटे भी खड़े कर लेती है। इलैक्ट्रिक ईल अपने शरीर में बिजली पैदा करती है जिसके द्वारा वह अपने शिकार को बेहोश कर देती है। यह राक्षसी जो छः से आठ फुट लम्बी होती है कुछ क्षणों के लिए घोड़े और आदमी तक को बेहोश कर सकती है।

चार आँखों वाली मछली जो नदियों की सतह पर तैरती दिखाई देती है कि हर आंख दो भागों में बंटी होती है ऊपरी भाग पानी से ऊपर देखने के लिए और निचला भाग पानी के नीचे देखने के लिए होता है।

ग्रेट बैरियर रीफ में पाई जाने वाली स्टोन फिश धूप सेकती हुई वहाँ के पत्थरों में पहिचानी जानी कठिन होती है। इसी प्रकार यूनिकार्न फिश और कौफर फिश भी अद्भुत किस्म की मछलियां होती हैं।

क्यों और कैसे ?
दीवाना
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

सुबह से एक मछली हाथ नहीं आई, लगता है अब कांटा फंसा है.
बुरे फंसे
मैं ने इसके पांवमें कांटा फंसा दिया है सुबह से कुछ मजा नहीं आया
मेरी मम्मी कितनी खुश होगी मेरी कामयाबी पर.
हमारी मम्मी कितनी खुश है हमारी कामयाबी पर.
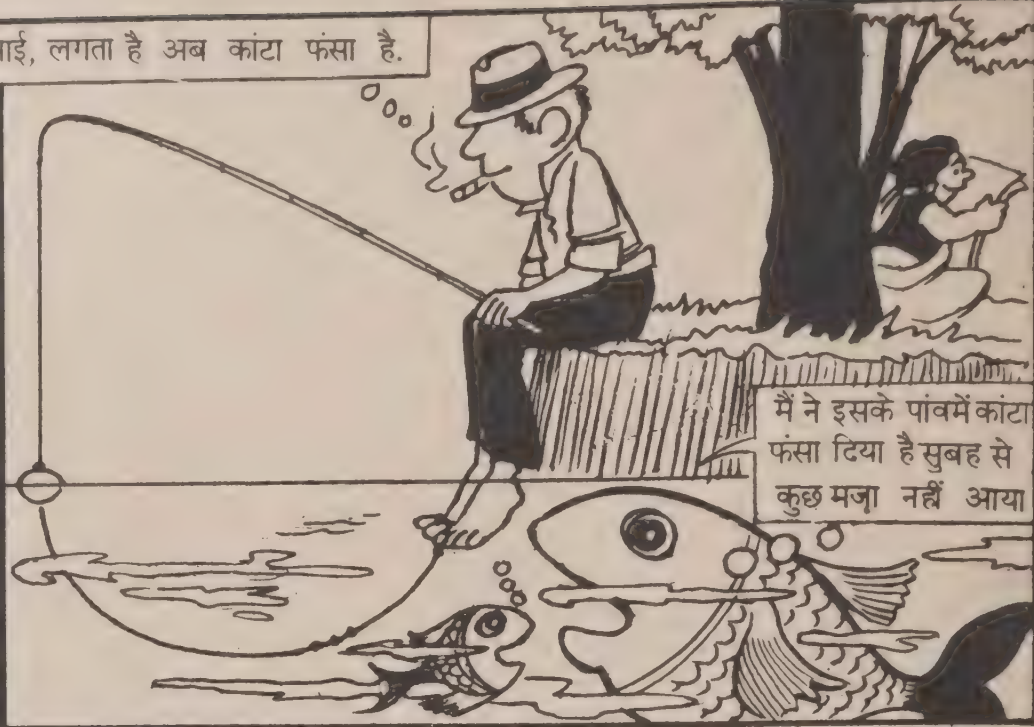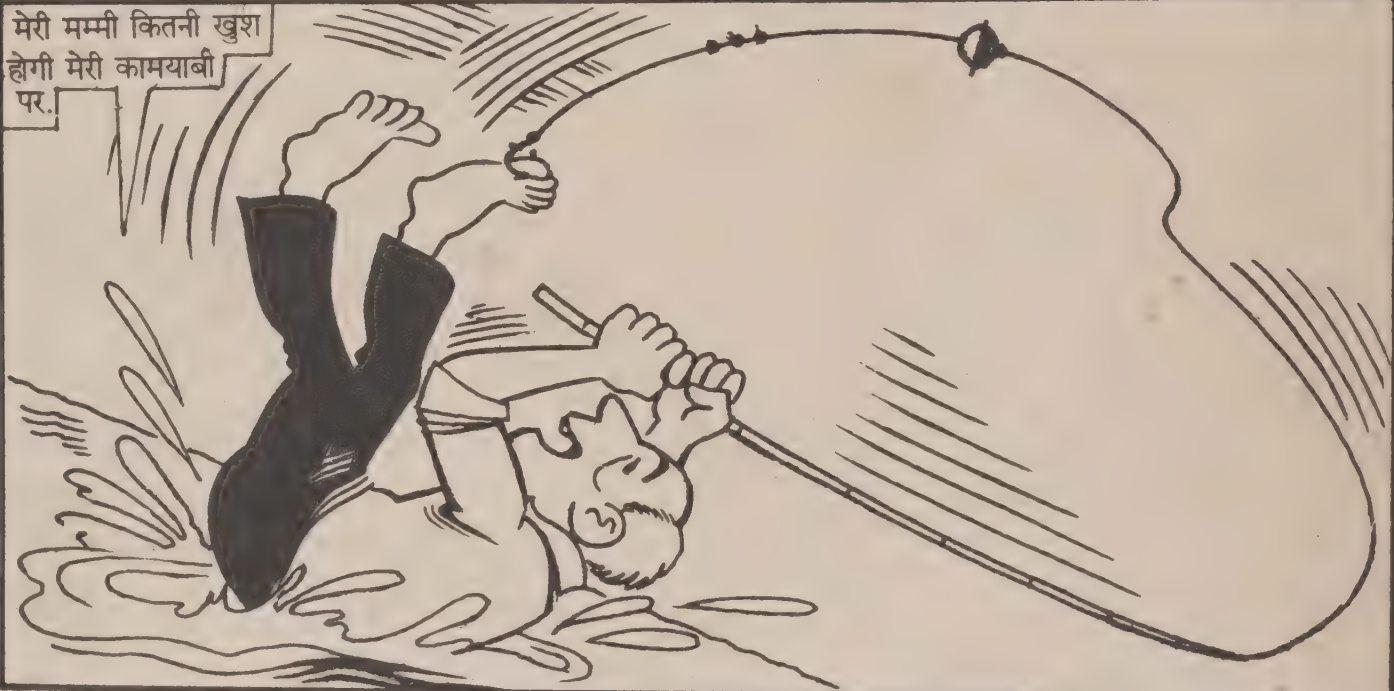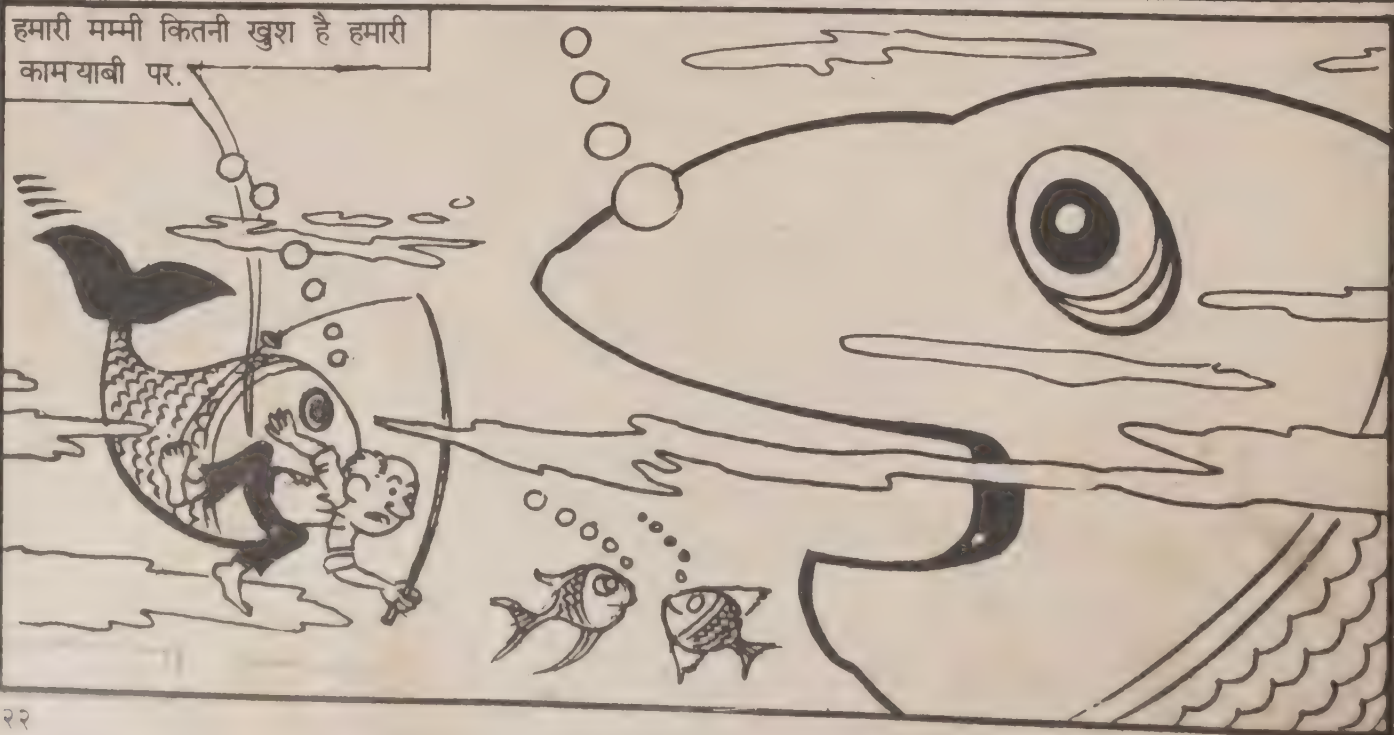
सवाल यह है?
मेरा मतलब है...मैं यह कह रहा था. मैं...मैं...मैं सोच रहा था, ...एक बात तुम से ...मतलब एक बात बहुत दिनों से...
ओफ्फो! आखिर आप क्या कहना चाहते हैं जी?

जवाब हाज़िर है जी.
I LOVE YOU

नेशनल स्वीमिंग क्लब
अगर आप तैरना नहीं जानते तो आगे मत जाइये....
क्या धौंस है इनकी? क्यों न जायें आगें?
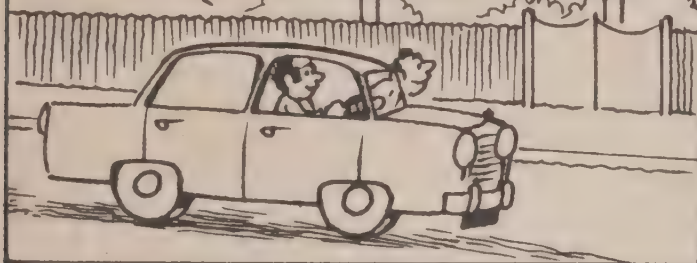
जवाब हाज़िर है.

सवाल यह है?
आहिस्ता बोलो ज्यूली. मैं अभी तुम्हारे सवाल का जवाब नहीं दे सकता.

पर जवाब तो फौरन ही हाजिर है.

सवाल यह है?
वेटर, अंडे बिल्कुल ताज़ा हैं ना?
बिलकुल ताज़ा हैं.

जवाब हाज़िर है
अभी-अभी मुर्गी के नीचे से उठा कर लाया हूं.

सिलबिल पिलपिल
मकड़ा और सकड़ा

पिलपिल जी, शऽऽऽऽ, उठो, देखो क्या गजब हो रिया है। रूमाल फट कर धोती बन रहा है।
माज़रा देखोगे तो थमारे होश उड़ जायेंगे। सिलबिल चद्दर समेत हवा में ऊपर उठ गया है।
क्यों चूं चूं मचा रहा है आधी रात को सोने दे।

देखो, पूरी तरह हवा में गुब्बारे की तरह तैर रहा है।
सुपर स्पाइडर मैन बन गया है यह तो।
आज दिन को स्पाइडर मैन के कॉमिक्स पढ़ रहा था शायद उसी का असर है यह।यह हर चीज को जरूरत से ज्यादा गहराई से लेता है।
और इसको शक्ल कैसी हो गयी है?
स्पाइडर मैन? यानि मकड़ा।

मैं अभी जाकर स्पाइडर मैन वाली कॉमिक्स पढ़ता हूं,फिर पता लगेगा कि स्पाइडरमैन क्या-क्या कर सकता है? शायद इसमें भी वही शक्तियां आ गई हों।
शक्तियां
स्पाइडर मैन में हाथी के बराबर ताकत होती है वह दीवार पर चल सकता है।छत पर चिपका रह सकता है। हवा में तैर सकता है।
इसमें भी वही शक्तियां हों तो हम इसे किराये पर चढ़ा कर मालामाल हो जायेंगे।
हमारी जासूसी कंपनी के वारे न्यारे होंगे।

यह मकड़ा बन गया है सुपर मकड़ा। इसका नाम सिलबिल है । 'स' से शुरू होता है इसलिये हम अपने याड़ी स्पाइडरमैन को सकड़ा कह कर पुकारेंगे ।
SAKDA AIRWAYS
ट्रेवल एजेंट
हम इसकी पीठ पर एक पुशबैक चेयर फिट करके हवाई जहाज की तरह चलायेंगे। सकड़ा एयरवेज प्राइवेट लिमिटेड। दिल्ली से कुल्लू मनाली तक हमारी सर्विस होगी।

(इधर देखो, यह क्या हो गया? सकड़ा तो पंखे से उलझ गया है और इसकी हवा निकल रही है।

स्पाइडर मैन के जाले में तो स्टील के तार की तरह मजबूती होनी चाहिये थी। इसका जाला तो कच्चे सड़े हुए धागे से भी कमजोर है। लगता है यह घटिया जनता क्वालिटी का स्पाइडरमैन बना है।

खोटा पैसा भी काम आ सकता है?
जनता क्वालिटी का स्पाइडरमैन अब एक ही काम के लायक रह गया है। हम इसे अपने ड्राइंग रूम में छत के साथ खूब लम्बा चौड़ा जाला फैलाने देंगे। सारी मक्खियां उस में फंस जायेंगी और हम डी. डी. टी. छिड़कने का खर्चा बचा लेंगे।

किचन में जाला फैलवा कर सारे कॉकरोचों से छुटकारा पा लेंगे। इसका लंच और डिनर का काम भी उन्हीं से चल जायेगा।

यह बातें तो बाद में भी होती रहेंगी पिलपिल साहब, पहले इसे पंखे से तो उतार लें। कहीं बिजली आ गयी और पंखा चल गया तो रुई की तरह धुना जायेगा।
हां

मेरे यार, तू कभी ठीक काम भी करेगा? स्पाइडरमैन बना तो इतना घटिया दर्जे का कि हमें पंखे से खुद बचाना पड़ा। हमारे कपड़ों और बदन पर सड़ा हुआ जाला ही जाला चिपक गया। हमारा कमरा बीस साल बाद के विश्वजीत के पुराने महल जैसा बन गया है।
खाना कैसे खायेंगे हम? खाने में भी जाले आ जायेंगे?
32

सारा जाला और सिलबिल को लपेट कर हमने सैलोफेन के थैले में बन्द कर दिया। अब कम से कम कमरे में गंद तो नहीं फैलेगा। अब यह
स्पाइडर मैन इन सैलोफैन बन गया है। इसके बाद शांति से बैठ कर हमें सोचना पड़ेगा कि इसे क्या करना है? क्या इलाज है?
स्पाइडर मैन कॉमिक छापने वालों को पार्सल करके भेज दो, यह सब उन्हीं के कारण हुआ है?

अभी एक काम इससे और लिया जा सकता है। खेलों में हम अपने सकड़े का प्रयोग कर सकते हैं। एशियाई खेलों में यह अपना करिश्मा दिखा सकता है।

जिस खेल में भी नैटों की जरूरत पड़ती है। वहां इसे लगाया जा सकता है। वालीबाल, वैडमिंटन और टैनिस के नैट अपने जाले द्वारा बुनने के लिये हम इसे स्पोर्टस क्लबों को किराये पर दे सकते हैं।
एशियाई खेलों के लिये सारे नेट यही बुनेगा। जाले का धागा पक्का निकले इसके लिये हम इसे देशी घी खिलायेंगे।
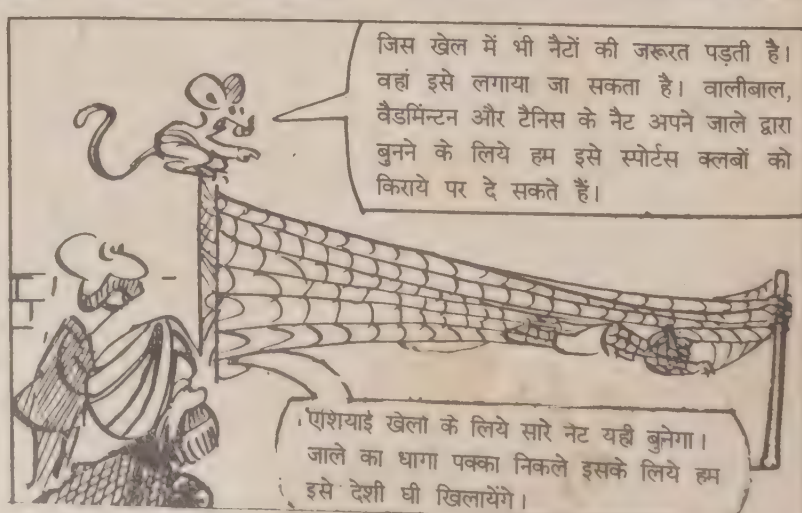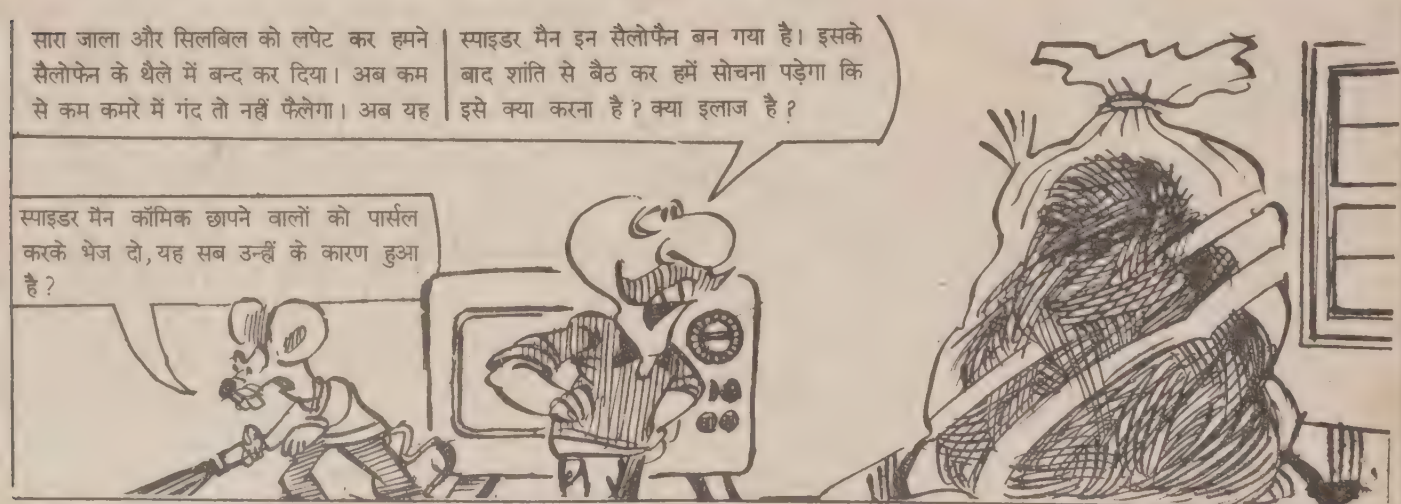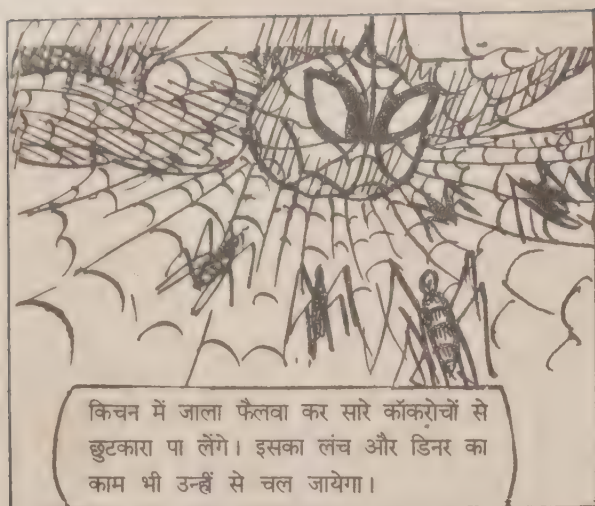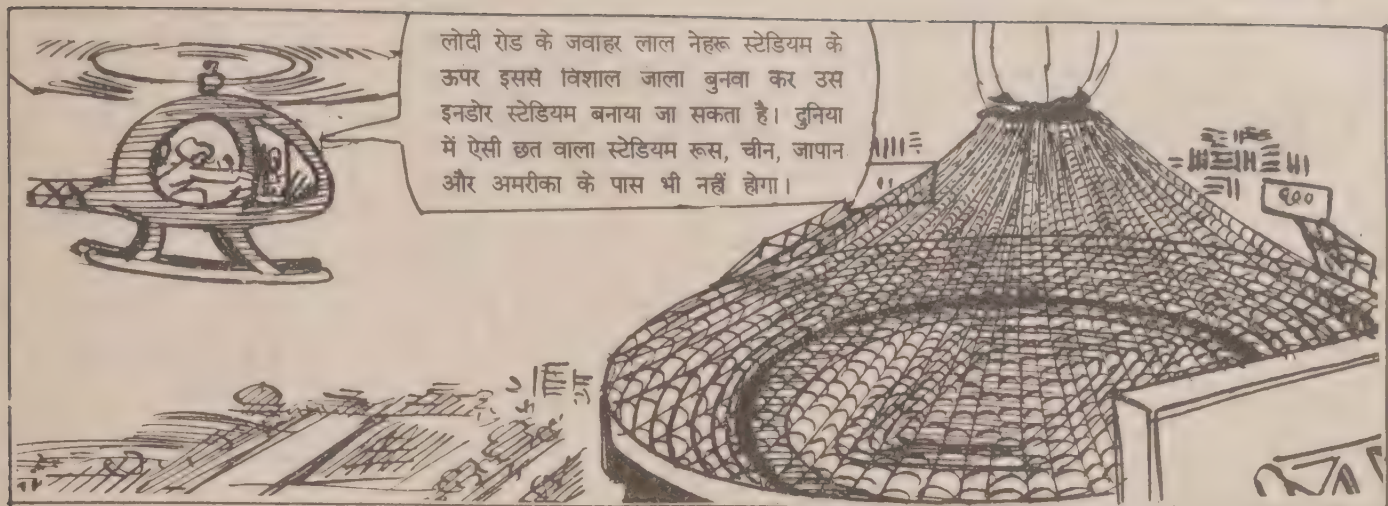
सिलबिल पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये!

टैस्ट क्रिकेट में रन आऊटों के किस्से

दिसम्बर १९८१ को मेलबोर्न टैस्ट में जब एलन बार्डर दोनों पारियों में रन आऊट हुआ तो सोचा गया देखें टैस्ट क्रिकेट में और किन खिलाड़ियों के साथ ऐसा हुआ। टैस्ट मैचों के रिकार्ड देखने पर पता लगा कि १२ बार पहले ऐसा हो चुका है। ऐसे खिलाड़ियों में वेस्ट इंडीज के पांच, एक इंगलिश, एक न्यूजीलैंड व एक पाकिस्तानी हैं। आस्ट्रेलिया के एलन बार्डर पांचवे आस्ट्रेलियाई हैं। जो इस प्रकार आऊट हुए। पूरा खाता इस प्रकार है।

नाम खिलाड़ी	देश	विरुद्ध	टैस्ट ग्राउंड	वर्ष
पीटर मैक एलीस्टर	आस्ट्रेलिया	इंगलैंड	मेलबोर्न	१९०७-०८
चार्ल्स कैलावे	,,	द. अफ्रीका	,, ,,	१९१०-११
जोहन राइडर	,,	इंगलैंड	सिडनी	१९२०-२१
जोहन ट्रिम	वे. इंडीज	आस्ट्रेलिया	मेलबोर्न	१९५१-५२
जैफ स्टालमीयर	,,	इंगलैंड	ब्रिजटाउन	१९५३-५४
ईयान मैकिफ	आस्ट्रेलिया	वे. इंडीज	ब्रिसबेन	१९६०-६१
जो सोलोमन	वे. इंडीज	आस्ट्रेलिया	मेलबोर्न	१९६०-६१
सैम[illegible]गर	न्यूजीलैंड	द. अफ्रीका	डयूनेडिन	१९६३-६४
रिच[illegible]डंस	वे. इंडीज	न्यूजीलैंड	विलिंगटन	१९६८-६९
क्लाइव लायड	,,	भारत	किंगस्टन	१९७०-७१
जोहन जेमसन	इंगलैंड	भारत	ओवल	१९७१
ज़हीर अब्बास	पाकिस्तान	आस्ट्रेलिया	मेलबोर्न	१९७२-७३
एलेन बार्डर	आस्ट्रेलिया	पाक	मेलबोर्न	१९८१-८२

(तिरह में से छः बार ऐसा एक ही टैस्टग्राउंड मेलबोर्न में हुआ)

विद्युत की सहायता से पौधे कैसे बोल सकते हैं?

ऐरीजोना की अमरीकन घाटी में एक बिजली के इन्जीनियर ने दूरस्थ महसूस करने वाले सिस्टम का विकास किया है जिसकी सहायता से उगती लहलहाती ६० किलो मीटर दूर आपस में गुपचुप बात करती पौधों की फसल की बातचीत वे सुन सकते हैं. यह कार्य इन्जीनियर साहब विश्वविद्यालय के अपने एयरकन्डीशन्ड आफिस में बैठे बैठे ही कर लेते हैं. यह संकेत पौधे के धूप तथा अन्य ऊर्जा उत्पन्न करने वाले पदार्थों को नये वनस्पति पदार्थों में बदलते समय उत्पन्न होते हैं. डा. विलियम गैनसियर का विचार है इन संकेतों को समझ पाने पर वे पौधे के अंकुरित होने से ले कर कटाई के लिये तैयार होने तक के विकास का निरधारण कर सकेंगे। इस कार्य के लिये उन्हें खेत में पैर तक नहीं रखना पड़ेगा. गैनसियर का विचार है कि पौधों के संकेतों को संसार की प्रसारण व्यवस्था से जोड़ा जा सकेगा. तथा संसार के किसी भी कोने में बैठे कृषि वैज्ञानिक सैटलाइट की सहायता से यह संकेत ग्रहण कर फसल के बारे में सब कुछ बता सकेंगे, उदाहरणतया फसल कैसी बढ़ रही है, पैदावार कितनी है इत्यादि।

पौधे का संकेत क्लोरोफिल के सौर ऊर्जा के विद्युत ऊर्जा में बदलते समय उत्पन्न होते हैं. यह ऊर्जा पौधे के हर भाग को इलैक्ट्रोन के रूप में भेजी जाती है, यह इलैक्ट्रोन एक प्रकार की विद्युत शक्ति उत्पन्न करते हैं जिसे गैनसियर एक यन्त्र की सहायता से नाप सकते हैं यह करने के लिये वे हर पौधे में पतले पत्रेडियम इलैक्ट्रोड लगा देते हैं तथा यह इलैक्ट्रोड खेत में लगे एक सैन्ट्रल बाक्स से जोड़ दिये जाते हैं जिसमें एक सूक्ष्म कमप्यूटर लगा होता है. इस कम्पयूटर द्वारा आसपास के वातावरण तथा पौधे के संकेत प्रतिदिन चौबीसों घंटे हर पन्द्रह मिनट बाद गैनसियर के दफ्तर को प्रसारित किये जाते हैं।

गैनसियर वोल्टेज के नमूने से पौधे की शारीरिक स्थिति का सामन्जस्य बैठाना चाहते हैं. अभी तक वे कृषि के पौधे पर विशेष प्रतिक्रिया का पता लगा चुके हैं. तथा उनका कहना है कि ऐसे संकेत भी हैं कि 'मुझे पौधे के संकेतों से पता चल जाये कब कपास उतारने के लिये तैयार हो गई है.''

फैण्टम - गुमनाम कमाण्डर

लड़के के पास नहीं पहुंच पा रहा !
!!
हे · · · · हे · · · · हे !
© 1980 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved

हे · · · · हे · · · · हे !
FALK & BARRY 9-10

हे · · · · हे !
वह रहा शेर !
श · · · · चुप · · · ·

आदमी और आदमखोर का मुकाबला
!!
हे ! हे ! हे !
FALK & BARRY 9-11
© 1980 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved

मीलों तक सुनीं जाने वाली दहाड़ के साथ ४०० पाउन्ड का जीव छलाँग लगाता है

आक्रमण · · · · ४०० पाउन्ड का भूखा शेर भाला निशाने पर लगता है !

वह भारी वजन के नीचे गिर जाता है !

!
!!!
FALK & BARRY 9-12
© 1980 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved

फैन्टम ?
FALK & BARRY 9-13

फैन्टम ?

शेर मर गया · · · ·
फैन्टम ?
क्रमशः
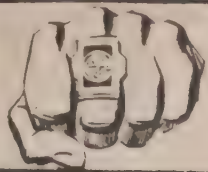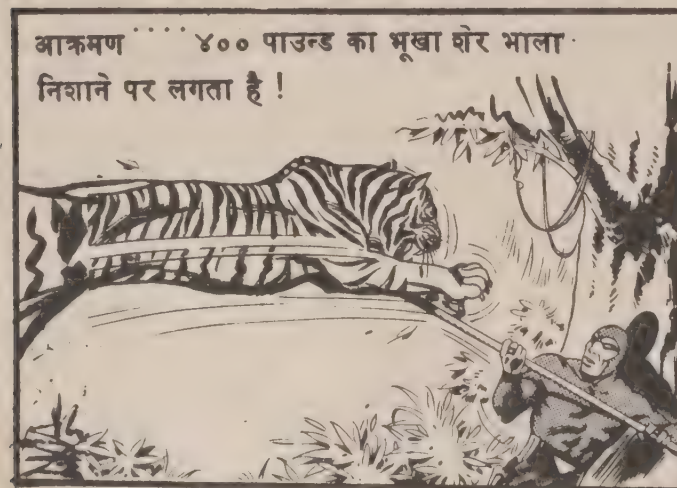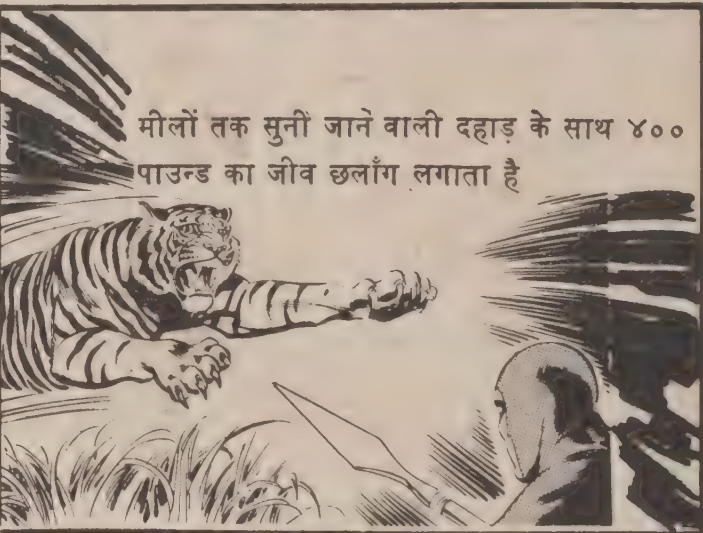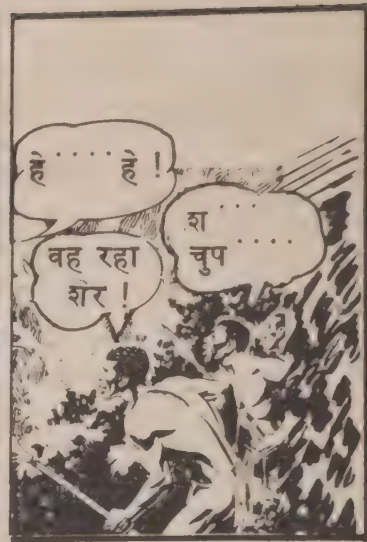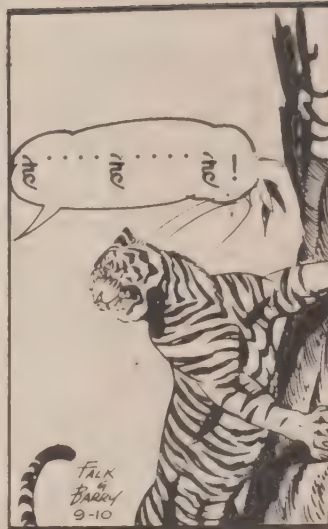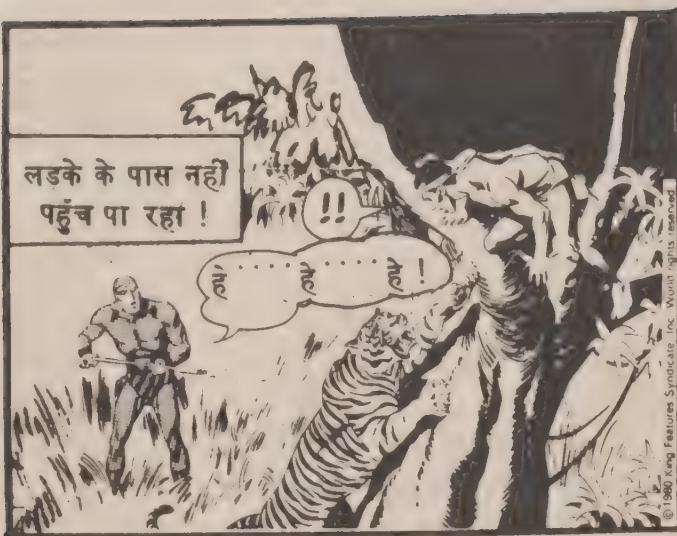
अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

गुरमीत सिंह मीता, नई दिल्ली : आजकल हर मनुष्य के दिमाग़ में कुछ न कुछ तनाव रहता है. ऐसा क्यों ?

उ० : क्योंकि आजकल इज़्ज़त से गर्दन का तनाव बनाये रखना मुश्किल हो रहा है.

राजेन्द्र सिंह बेदी, सितारागंज : प्यारे चाचे, जब आप कुंवारे थे, तब क्या आप ने किसी से इश्क लड़ाया था ?

उ० : जी नहीं. पतंग लड़ाने के अलावा हम और कुछ लड़ाने में विश्वास नहीं रखते.

राजू चावला, सहारनपुर : चाचा जी, मेरी प्रेमिका रूठ गई है, बताइये उसे कैसे मनाऊं ?

उ० : क्या बतायें माई डीयर राजू. इस प्रश्न के उत्तर में एक और प्रश्न हाजिर है इस शेर के रूप में:

''मेरा सर उन के कदमों पर वे दामन को बचाते हैं,
इलाही क्या इसी तरह से रूठों को मनाते हैं ?''

वेद प्रकाश 'अमित', दिल्ली : चाचा जी, किसी प़र दिल आ जाये तो क्या होता है ?

उ० : कसूर दिल का होता है और सज़ा आखों को मिलती है और वह कमैटी के बेटूटी वाले नलके की तरह बहने लगती हैं.

विनोद पुरी 'रंजू', लुधियाना : चाचा जी, लड़कियां सिगरेट से नफ़रत क्यों करती हैं ?

उ० : कौन सी दुनिया में रह रहे हैं आप विनोद जी ? आजकल की आज़ाद ख्याल लड़कियां खुद सिगरेट पीती हैं. और मम्मी डैडी के साथ बैठ कर पीती हैं.

अरुड़, विदिशा : कृपया बतायें, यदि आप को एक दिन के लिये प्रधान मंत्री बना दिया जाये तो सब से पहला काम आप क्या करेंगे ?

उ० : सदा के लिये प्रधानमंत्री बने रहने के लिये दूसरों की टांगें खींचना शुरू कर देंगे।

चन्द्र शेखर गोस्वामी, हरिद्वार : चाचा जी आप राजनारायण को दीवाना का उपसम्पादक क्यों नहीं बना लेते ?

उ० : क्योंकि यह दीवाना है, कोई पागल खाना नहीं है.

अशोक जौहर गगन : चाचा जी, हमारी आंटी की जगह यदि आप को हेमा मालनी जैसी कोई हसीना मिल जाती तो क्या होता ?

उ० : हम हे मां हे मां कह कर अपनी मां की गोद में छुपा लेते. आप को शायद मालूम नहीं अशोक भतीजे कि हसीना की अच्छी सूरत कितनी बड़ी मुसीबत होती है. इस के लिये एक शायर ने कहा है:

अच्छी सूरत भी क्या बुरी शै है,
जिस ने डाली बुरी नज़र डाली.

पंकज कुमार, सिलीगुडी : संपादक अंकल, मैं चिल्ली से मिलना चाहता हूं, क्या करूं ?

उ० : दीवाना के हर अंक में चिल्ली अपनी भरपूर दीवानगी के साथ आप से मुलाकात करता है. आप उस से साक्षात मिलना चाहते हैं तो. दिल्ली आ कर हमारे कार्यालय में पधारिये, पर कोई भारी भरकम उपहार लाना न भूलिये. क्योंकि चिल्ली का असूल है और वह अपने हर चाहने वाले से कहता है, ''मैं आप के यहां आऊंगा तो आप मुझे क्या देंगे और आप मेरे यहां आयेंगे तो मेरे लिये क्या लायेंगे ?

सुलतान अहमद, हैदराबाद : मैं ने सुना है राजनारायण के पास एसी दवा है जिसके लगाने से गंजे सर पर बाल उग आते हैं, आप उसे इस्तेमाल कर के लाभ क्यों नहीं उठाते ?

उ० : जिस ने चौधरी साहब के सर से बाल उखाड़ कर वहां घास उगा दी आप उस की दवा से लाभ उठाने की बात कर रहे हैं ?

प्रह्लाद जसवानी, कृष्ण कन्हैया, मण्डाला : चाचा जी, रिश्वत लेने वाला भगवान से क्यों नहीं डरता ?

उ० : भगवान के मन्दिर में भी तो चढ़ावा चढ़ जाता है, फिर उस से डरने का क्या मतलब ? किसी शायर ने कहा है:

बेईमानी से न डर,
इसके मजे तू लूट जा.
ले के रिश्वत फंस गया है,
दे के रिश्वत छूट जा.

नरेन्द्र गुलाटी, लुधियाना : अगर अक्ल बाज़ार में बिकने लगे तो सब से पहले इसे खरीदने के लिये कौन दौड़ेगा ?

उ० : चौधरी चरण सिंह और देवी लाल.

राजेश अरोड़ा, 'बबलू', जोधपुर : चाचा जी, आजकल लोग पैसे को अधिक महत्व क्यों देने लगे हैं ?

उ० : आजकल वाली बात छोड़िये राजेश साहेब. जब से दुनिया बनी है, पैसे का महत्व रहा है, जब तक दुनियां रहेगी पैसे का महत्व रहेगा और यह माना जाता रहेगा, ''बाप बड़ा न भईया, भईया सब से बड़ा रुपईया.''

सुरेश खुराना, 'पप्पी' जीन्द : चांद में दाग होते हुये भी लोग उसकी सुन्दरता का वर्णन क्यों करते हैं ?

उ० : यह बात इतनी आसानी से आप की समझ में नहीं आयेगी. जब तक आप हमारी श्रीमति जी का मुहार के छत्ते जैसा चेहरा न देख लें, आप को यह विश्वास नहीं होगा कि चांद सी सूरत किसे कहते हैं.

केवल प्रकाश दुआ, काशीपुर : क्या भगवान नहीं जानता कि उस की बनाई हुई दुनिया में क्या-क्या गुल खिल रहे हैं ?

उ० : कैसे जान सकता है जब तक वह दिल्ली की बसों में सवार हो कर जेब न कटवा ले, राशन की दुकान पर लाईन में खड़े हो कर सर न फुड़वाले और दहेज के नाम पर अपने ऊपर मिट्टी का तेल छिड़क कर आग न लगा ले.

कुमारी शान्ति, धनवाद : डीयर चाचा जी. शीशा टूट जाये तो बेकार होता है. यदि दिल टूट जाये तो ?

उ० : बड़े काम की चीज बन जाता है. एक शायर ने कहा है:-

मुहब्बत के लिये दिल ढूंढ़ कोई टूटने वाला,
ये वो शै है जिसे रखते हैं नाजुक आबगीनों में.

सुरेश खुराना, 'काका' पानीपत : मां के पैरों में स्वर्ग होता है, तो प्रेमिका के पैरों में क्या होता है ?

उ० : लकड़ी की एड़ी वाला सैंडिल.

कृष्ण मरवीजा, पानीपत : मनुष्य ९९ के चक्कर में कब फंसता है ?

उ० : विवाह के बाद. जिस के लिए एक कवि ने कहा है:

भूल गये राग रंग, भूल गये छकड़ी,
तीन चीज़ याद रहीं, नून, तेल, लकड़ी.

मधुकर चुटे, लुधियाना : आपका प्रिय खेल कौन सा है ?

उ० : लोगों के दिलों से खेलना.

प्रेम बाबू शर्मा, 'सुमन'', बगीचीपीर जी : डीयर अकंल, इज़ इट राईट दैट वैरी गुड लाईफ, विदआऊट वाईफ ?

उ० : नो गुड लाईफ विदआऊट गुड वाईफ.

विजय कुमार गुप्ता, झरिया : रिश्वत और कमीशन में क्या अंतर है ?

उ० : एक हराम की कमाई है और दूसरी हलाल की.

आपस की बातें
दीवाना
८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

चना कुरमुरा

एक व्यक्ति पुरानी कारों के इश्तहार अखबार में देख रहा था उसकी हैरानी का ठिकाना न रहा जब उसने पढ़ा फीएट 1980, सिर्फ दो सप्ताह चली हुई केवल 500 रुपये।

वह तुरन्त इश्तहार में लिखे पते पर पहुंचा, दरवाजे पर उसका स्वागत एक महिला ने किया। उन्होंने गैरेज में खड़ी कार दिखाई जो बिलकुल इश्तहार के मुताबिक नई और चमकती हुई थी।

कार की कीमत चुका देने के बाद व्यक्ति से रहा नहीं गया और वह महिला से पूछ ही बैठा आखिर उन्होंने यह कार इतनी सस्ती क्यों बेची?

हाँ! स्त्री बोली, मेरे पति ने कार पिछले सप्ताह अपनी मृत्यु से कुछ ही पहले खरीदी थी। अपनी वसियत में उन्होने लिखा हुआ है कि इस कार को बेच कर पैसा उनकी सेक्रेटरी को दे दिया जाये। मैं तो केवल उनकी अन्तिम इच्छा का पालन भर कर रही हूं।'

चित्र वर्ग पहेली

शब्द बनाइये—नीचे बेतरतीब से दिये अक्षरों को आप ठीक क्रम में रखें तो सार्थक शब्द बनेंगे। उन्हें ठीक क्रम में साथ दिये वर्गों में भरें।

दायीं ओर के चित्र के सवाल का मजेदार जवाब पाने के लिए बांयीं ओर भरे वर्गों को नीचे नये क्रम से रखें।

विदेशों में कैरवानों का बड़ा प्रचलन है। कार की खिड़कियां व पिछला दरवाजा खोलो और गाड़ी चलते-फिरते घर का रूप धारण कर लेती है लोग सफर करते हैं और इन्हीं को घर बना कर रहते हैं। भारत में मकानों की कमी है फिर भी इनका प्रचलन नहीं है शायद इसलिये कि इनमें रहना '' '' कहलायेगा।

जीतिये इनाम १० रू०

टकसहमासा

धरचकआ

कपरवशाि

करनटकमाा

अन्तिम तिथि
४-६-८२

नाम ----------
पता ----------
----
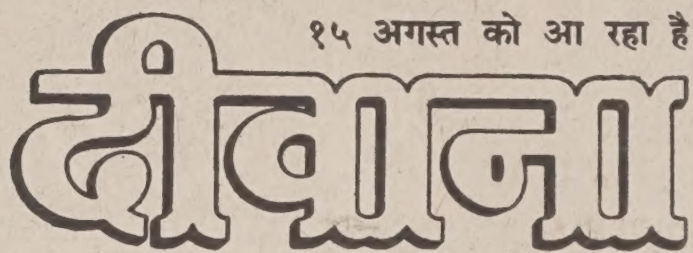
१५ अगस्त को आ रहा है
दीवाना
स्वतन्त्रता दिवस विशेषांक
● हर पृष्ठ पर नया हंगामा ● हर हंगामे में नई दीवानगी ● नेताओं के फिल्मी पोस्टर ● नेताओं के फिल्मी-गीत ● भगवान के नाम पन्द्रह अगस्त की डाक ● आजादी कैसी-कैसी ● आजादी का कचूमर ● स्वतन्त्रता संग्राम-डिस्को स्टायल ● फिल्म पैरोडी—हीरों का चोर ● दीवाना पृष्ठ मोड़िये ● एक फैशन मॉडल का राष्ट्र के नाम संदेश (१५ अगस्त की पूर्व संध्या पर)।
और साथ ही सभी स्थाई स्तम्भः
मोटू-पतलू, सवाल यह है, बुरे फंसे, नामी चोर, लल्ला की लव स्टोरी, सिलबिल-पिलपिल, फैण्टम, सवाल यह है, राजा जी, मदहोश, चिल्ली लीला, आपस की बातें, बोलते अक्षर, बन्द करो बकवास, गरीबचन्द की डाक, आपके पत्र, क्यों और कैसे, खेल-खेल में, फिल्म जगत, वर्ग पहेली, आपका भविष्य, धारावाहिक उपन्यास और कई नये अन्य मनोरंजक फीचर।
इतनी सामग्री आपको किसी अन्य एक ही पत्रिका में एक साथ नहीं मिल सकती। यही कारण है कि लाखों परवानों का दीवाना बच्चों, युवकों और बूढ़ों में एक समान लोकप्रिय है।
एजेण्ट से कह कर अपनी कापी अभी से सुरक्षित करा लीजिये।
बढ़े हुये पृष्ठ
मूल्य केवल २.०० रुपये
एजेन्टों से अनुरोध ——— अपनी बढ़ी हुई प्रतियों के लिये आज ही लिखिये.
नये स्थानों पर एजेंसियों के लिये इस पते पर लिखें—
The Central News Agency, 4-E/4, Jhandewalan Extension, New Delhi.

अजय भोला, ग्रोवर बुक सेन्टर, 7 गोपाल पार्क दिल्ली, 23 वर्ष, फिल्मों में काम करना।

लाखन सिंह, कल्याणपुरी, दिल्ली 99, 22 वर्ष, पिक्चर देखना, दीवाना पढ़ना।

अजीत कपूरिया, डी-617 जे. जे. कालोनी, वजीरपुर दिल्ली 52, 20 वर्ष, पत्र मित्रता।

ओम प्रकाश कसेरा, गांधी चौक मुंगेर बिहार, 16 वर्ष, दीवाना पढ़ना, फिल्म देखना।

सलाऊद्दीन इलाला, द्वारा मो. साफी साईकिल सर्विस, नई सड़क, घन्टाघर रोड, जोधपुर।

मो. इर्शामन खां, नाज स्लाग, नया चौक वाराणसी, 17 वर्ष, पिक्चर देखना, पढ़ना।

प्रदीप गुप्ता, 755 ब्रह्मपुरी मेरठ-2 उ. प्र., 23 वर्ष संगीत सीखना।

राजमणी अकेला, द्वारा श्री वी. आर. यादव, क्वाटर नं. एस. II/121 डी. बोकारो।

अजय पुरोहित, दमेरा जाली-डी. मोरा, 396321, 20 वर्ष, कविता पढ़ना, पत्र मित्रता।

हितेश कुमार परमार, ईस्ट सलानपुर कोणयारी, कतरासगढ़ धनबाद, बिहार, 12 वर्ष।

प्रमोद कुमार नौधानी, कैंट्रीन हमोज जशहरी खाल, पोढ़ी गढ़वाल उ. प्र., 17 वर्ष।

धर्मवीर सिंह, एम. 186 मंगोल पुरी, दिल्ली 83, 22 वर्ष, पैसे कमाना, सिनेमा देखना।

हुकम चन्द बिरला, 112 शॉपिंग सेन्टर कोटा राजस्थान, 19 वर्ष, दीवाना पढ़ना।

विनोद कुमार बरमसिंह निया टीचर कालोनी, धनबाद बिहार 18 वर्ष, गाना गाना।

देवन्द्र सिंह बुन्देला, पोस्ट-आफिस के सामने, नौगांव आर. के. डी. म. प्र. 16 वर्ष।

हरीश कुमार हकिमीगानी, 343/25 आशा गंज अजमेर, 20 वर्ष, पत्र मित्रता।

मनीस कुमार अग्रवाल, 31/3 थमनी बाजार कानपुर, 208001, 12 वर्ष, पढ़ना।

अरुणनेन्द्र नाथ माव, 607 सिविल लाईन्स, कल्याणी देवी उन्नाव, 14 वर्ष, गीत गाना।

विरेन्द्र सहगल, व्यामा भिजज जवाहर नगर मण्डी, हिमाचल प्रदेश, 18 वर्ष, पत्र मित्रता।

संजय कुमार भोला, सदर बाजार मुरार, ग्वालियर म. प्र. 16 वर्ष, क्रिकेट खेलना।

ज्ञान बहादुर अन्जान, पाटन मंगल बाजार, काठमांडो नो. बाहल टाल 12/19 नेपाल।

तौहीद जमाल, मिलकी मौहल्ला आरा, भोजपुर बिहार, 18 वर्ष, प्यार करना।

युवानाथ पहया, जैदी पंचायन वार्ड नं. 8, धुल्कु गांव गारो सीरनार, धौलगिरी नेपाल।

मुन्ना लाल गुप्ता मुन्हौरा पुरानी गोला सारण छपरा बिहार, 20 वर्ष, पाठ पढ़ना।

रामस्वरूप सैनी, द्वारा हरी राम सैनी, कालोवाली, सिरसा, 19 वर्ष, गीत सुनना।

शालू खुराना, सब्जी मण्डी जींद, 20 वर्ष, दीवाना पढ़ना, फरमाईश भेजना।

तेजिन्दर पाल सिंह, 1457 अरबन एसटेट करनाल 132001, 21 वर्ष, पत्र मित्रता करना।

रमेश चन्द्र सक्सेना, स्मार्ट टेलर्स, खटीमा टनकपुर, जि. नैनीताल, 13 वर्ष, दोस्ती करना।

विजय कुमार, कुमार सैन बाजार, जिला शिमला हि. प्र. 22 वर्ष, दीवाना पढ़ना।

सत्यनारायण लौहान, मकान नं. 379 प्रेम नगर करनाल, (हरियाणा), 16 वर्ष।

शिव चन्द्र खुराना, बी. II 1362 आर्य मुहल्ला लुधियाना, 18 वर्ष, फरमाईश भेजना।

मुरारीलाल भटनागर, जिवली बाजार रिवाडी, (हरियाणा), 17 वर्ष, पत्र मित्रता करना।

जयभगवान भरद्वाज, 3071 भारद्वाज भवन, जयपुर रोड रिवाडी, 18 वर्ष, ताश खेलना।

योगेन्द्र शर्मा, इन्द्रा नगर 202 मेरठ, 17 वर्ष, हास्य स्टेज आर्टिस्ट, जूडो कराटे खेलना।

तारिक, बी. द्विव्तीया होस्टिल ए. एम. यू. अलीगढ़, 16 वर्ष, क्रिकेट खेलना ताश खेलना।

मोहम्मद शफी खान, मो. शफी साईकल सर्विस, नई सड़क घन्टाघर रोड, जोधपुर।

हरीश आसवानी, 92 वल्लभ नगर, कालोनी कोटा, 17 वर्ष, तार भेजना।

मधुकर नीलकंठराव चुटे, 431 गुमानपुरा, इंदिरा हाऊसिंग, सोसायटी देवपुर चुरु, 16 वर्ष।

सुमन कुमार जैन, 696 सराफा वार्ड जबलपुर, (म. प्र.) 482002, 20 वर्ष।

राजेश कुमार, शाह भवान, लाधा बिल्डिंग पो. कतरासगढ़ (धनबाद) 898113, 16 वर्ष।

दीवाना फ्रैंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें

हमारा पता : दीवाना फ्रैंड्स क्लब,
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ------------------------------

पता ------------------------------

आयु ------------------ शौक ------------------